# ॥ संस्कृतद्वितीयपाठः ॥

छात्राणां गृहे विपण्यां राजद्वारे च परस्परम्
संस्कृतभाषायां संभाषणशिक्षकः ।

कुम्भघोणस्थेन
मल्लियं रामाचार्यसूनुना
पण्डित टी. आर. कृष्णाचार्येण
विरचितः ।

THE

# SANSKRIT SECOND READER

Treating the Art of mutual conversation
Regarding Practical Matters,
for the use of Secondary Schools

BY

**Pandit, T. R. KRISHNACHARYA**
KUMBAKONAM.

THIRD EDITION.—COPIES 2000.

PRINTED AT THE
**SRI VIDYA PRESS,**
KUMBAKONAM.

Registered under Act XXV of 1867,

**Price As. 10.**] (*All Rights Reserved*) [**Postage Extra.**

1927.

# CONTENTS.


Benedictory Verses.

| | | PAGE. |
|---|---|---|
| 1. | Pronouns. | 1 |
| 2. | Adjectives. | 4 |
| 3. | Avyaya. | 6 |
| 4. | Time. | 8 |
| 5. | Planets. | 10 |
| 6. | Men. | 11 |
| 7. | Number. | 14 |
| 8. | Water. | 18 |
| 9. | Relations. | 20 |
| 10. | Diseases etc. | 22 |
| 11. | General commerce | 24 |
| 12. | Grains etc. | 26 |
| 13. | Dress & clothing. | 27 |
| 14. | Jewellery. | 29 |
| 15. | Vegetables. | 31 |
| 16. | Diet. | 33 |
| 17. | Mountains. | 36 |
| 18. | Quadrupeds etc. | 39 |
| 19. | Places and countries. | 45 |
| 20. | Furniture. | 52 |
| 21. | Vehicles. | 58 |
| 22. | Learning and Education. | 62 |
| 23. | Advice. | 65 |
| 24. | Administration | 67 |
| 25. | Judicial Dept. | 69 |
| 26. | Police Dept. | 71 |
| 27. | Municipal Dept. | 72 |
| 28. | Registration Dept. | 73 |
| 29. | Postal Dept. | 73 |
| 30. | Miscellaneous Departments. | 75 |
| 31. | Benefit of the British Rule. | 76 |
| 32. | Selections. | 76 |
| 33. | Raghuvamsa XI Canto. | 81 |


ॐ

श्रीगणेशाय नमः ।

# संस्कृत द्वितीयपाठः ।

## सर्वनामवर्गः ॥ १ ॥

### पाठः १.

१. अहं गच्छामि २. आवां गच्छावः ३. वयं गच्छामः ४. त्वं गच्छसि ५. युवां गच्छथः ६. यूयं गच्छथ ७. सः गच्छति ८. तौ गच्छतः ९. ते गच्छन्ति १०. सा गच्छति ११. ते गच्छतः १२. ताः गच्छन्ति १३. तत् पतति १४. तानि नश्यन्ति १५. अयं मम पिता १६. इमे हरेः पुत्राः १७. इयं तव जाया १८. इमाः तस्य पुत्र्यः १९. इदं तस्याः गृहम् २०. इमानि पुष्पाणि २१. सर्वे जनाः २२. सर्वाः कन्याः २३. सर्वाणि वस्तूनि ॥

## पाठः २.

१. एषः दाशरथिः २. एषा सीता ३. एतत् जलम् ४. एतानि रत्नानि ५. असौ सूर्यः ६. अमी देवाः ७. असौ नारी ८. अमूः दुहितरः ९. अदः फलम् १०. अमूनि तृणानि ११. यः पुरुषः १२. ये अतिथयः १३. या वधूः १४. याः कथाः १५. यत् काष्ठम् १६. यानि वस्त्राणि १७. को देवः? १८. के नृपाः? १९. का तव कान्ता? २०. काः तस्य कुमार्यः? २१. कानि पद्मानि? ॥

---

## पाठः ३.

१. त्वं कः? २. किं ते नाम? ३. अहं गोविन्दस्य भ्राता ४. मां जानासि किम्? ५. आवां सतीर्थ्यौ खलु ६. अस्मान् स व्यस्मरत् ७. तमहं स्मारयामि ८. अहं त्वां तत्रापूर्वामपश्यम् ९. तैर्यूयं बहु उपकृताः १०. तत् कार्यमस्माभिः कृतम् ११. तुभ्यं शतं ददामि १२. मयि तेषां विश्वासोऽस्ति १३. एष स्निह्यति तस्याम् १४. कुत इयं मम पुत्रमताडयत् १५. किं तेनापराद्धम्? १६. यः रथेन गच्छति स राजा १७. यस्य भार्या मैथिली स एष रामः १८. मम च्छात्रेषु एकैकोऽपि पटुः १९. ईश्वरः अनेकान् जन्तून् सृजति २०. अपरः कोऽपि न तथाविधः २१. इदं मम माऽस्तु २२. तत् तवैव अस्तु २३. अन्यन्मे देहि २४. अयमन्यः सेवकः ॥

5. सतीर्थ्यः=a fellow student. 18. छात्रः=a pupil.

---



## पाठः ४.

१. ते सर्वे राजपुरुषाः २. कति ब्राह्मणा वसन्ति? ३. तव कति स्नुषाः? ४. कति फलानि तव अपेक्षितानि? ५. तत्कार्यं वयं कुर्मः? ६. अस्मान् साधु विचिन्तय ७. ते युष्मान् पृच्छन्ति ८. इयं तस्मै रोचते ९. कतममपराधमकरोत्सः? १०. ईश्वरो न केनापि सृष्टः ११ तस्य उत्पत्तिर्नास्ति १२. सर्वेषामपि स एव स्रष्टा १३. आगच्छतु भवान् १४. कुत्र गच्छति भवती? १५. पूर्वेषां मार्गोऽनुसर्तव्यः १६. स्वस्मै यद्धितं तत्कुर्यात् १७. कतरो ब्राह्मण उत्तमः? १८. अन्यतरस्मै दक्षिणां देहि १९. अनेके राजानस्तत्रागताः २०. त्वं मां स्मर वा मा वा; अहं तु त्वां न विस्मरेयम् ॥

---

2. कति=how many. 9. कतमः=which of many. 13. भवान्=your honour. 17. कतरः=which of two? 18. अन्यतरः=one of two.

# विशेषणवर्गः ॥ २ ॥

## पाठः ५.

१. **दीर्घो**ऽयं दण्डः २. तस्य आकारो **ह्रस्वः** ३. अयं वृक्ष **उन्नतः** ४. **नीरोगः** पुरुषः **सुकृती** ५. **कुशलो**ऽयं भिषक् ६. पुष्पाणि **सुरभीणि** ७. **प्रांशुरयं** पर्वतः ८. कम्बलोऽयं **मृदुः** ९. शिला **कठिना** १०. स्वेषु कार्येषु सर्वे **जागरूकाः** ११. परेषां कार्यात् **प्रमत्तो**ऽयम् १२. **अलसः** पुरुषः सुखं न लभते १३. **एकाकी** पन्थानं न गच्छेत् १४. **तीक्ष्णं** वाक्यं न वद १५. **बुभुक्षिताय** अन्नं देयम् १६. धेनुः वत्से **उत्सुका** वर्तते १७. **स्थावरेषु** वस्तुषु वृक्षाः **श्रेष्ठाः** १८. **जङ्गमेषु** मानवाः **श्रेष्ठाः** १९. **दक्षिणेन** हस्तेन भोक्तव्यम् २०. मम **वामः** पादो भग्नः २१. **आर्द्रं** वस्त्रं आतपेन **शुष्कं** भवति २२. **हृष्टः** पुरुषो **बली** भवति २३. **श्वेतो** हयो धावति २४. **रक्तां** शाटीं संन्यासी वस्ते ॥

---

4. सुकृती = fortunate. 10. जागरूकः = wakeful. 11. प्रमत्तः = negligent. 13. एकाकी = alone. 16. उत्सुकः = eager. 19. दक्षिणः = right (not left). 20. वामः = left. 21. आर्द्रम् = wet. शुष्कम् = dried. 24. शाटी = a cloth in general.



## पाठः ६.

१. **कृपणं** नरं निन्दन्ति जनाः २. **वदान्यं** स्तुवन्ति ३. **मलिनं** पटं न वसीरन् ४. **धौतं** वस्त्रं धारयेयुः ५. **अल्पार्घं** सीसम् ६. **महार्घं** सुवर्णम् ७. कूपे **प्रभूतं** पयो वर्तते ८. तत्पात्रम**णु** ९. **महदिदं** निकेतनम् १०. **दरिद्रः** सुखं शेते ११. **आढ्यस्य** चोरेभ्यो भयं वर्तते १२. व्याघ्रो **घातुकः** प्राणी १३. **पिशुनो** दोषानेव गृह्णाति १४. पर्वताः **स्थिराः** १५. **सहिष्णुरयं** गर्दभः १६. राक्षसा **निर्घृणाः** १७. **कर्मकरो** भारमानयति १८. **कर्मकरी** जलं वहति १९. **भुक्त्वा तृप्तो**ऽहम् २० इदं सरो जलेन **पूर्णम्** २१. स ग्रामात् **प्रोषितः** ॥

---

## पाठः ७.

१. **अनपराधी** स **वृद्धः** २. **कुत्सितं** कार्यं न कर्तव्यम् ३. **वञ्चकाः** क्षेमं न लभन्ते ४. **उपकारिणे** प्रत्युपकारः कर्तव्यः ५. दधि भक्षयित्वा **पुष्टो** बिडालः ६. चिन्तया **कृशो**ऽयं नरः ७. शकटस्य चक्रं **वर्तुलं** वर्तते ८. शाला **चतुरस्रा** वर्तते ९. **स्तोकं** वदेयम् १०. **वामनो** बाहू उत्क्षिपति

---

13. पिशुनः = tale-bearing. 15. सहिष्णुः = patient. 1. अनपराधी = innocent. 2. कुत्सितम् = censurable. 5. पुष्टः = nourished. 8. चतुरस्रा = quadrangular.

११. नदी कुटिलं गच्छति १२. रज्जुरियं दृढा १३. पुरातनोऽयं देवालयः १४. नवीनोऽयं ग्रामः १५. स प्रत्यक्षमचोरयत् १६. स परोक्षे मां निन्दति १७. न नग्नः स्नायात् १८. सुन्दरोऽयं पुरुषः १९. स कुरूपः २०. द्विज इति ब्राह्मणक्षत्रियविशां साधारणं नाम ॥

---

# अथ अव्ययवर्गः ॥ ३ ॥

## पाठः ८.

१. पुनरागतो जामाता २. प्रायः स राम एव भवेत् ३. प्रागेवाहं तमवदम् ४. एवं कुरु ५. तथा मा कुरु ६. अन्तर्मा प्रविश ७. बहिः निःसर ८. अलं तव स्नेहेन ९. सदा त्वं मृषा भाषसे १०. इदानीं उत्तिष्ठ ११. सर्वदा पठ १२. कदाचन क्रीड १३. अत्र आगच्छ १४. तत्र गच्छ १५. यदा सुवृष्टिर्भविष्यति तदा सुभिक्षं भवेत् १६. बुद्धिमन्तं प्रति सकृत् उक्तमपि अलम् १७. बुद्धिहीनाय असकृदुक्तमपि वृथा भवति १८. तं बहुशोऽहं निवारितवान् १९. तथापि स तस्य पृष्ठतो धावति २०. प्रासादात् अधः पतितो बालः ॥

---

8. अलम्=enough.



## पाठः ९.

१. कुत्र तव गृहम्? २. यत्र ब्राह्मणानां निवासः तत्रैव ३. पथि पुरतः पृष्ठतश्च दृष्ट्वा गच्छेत् ४. अद्य राम आगतः ५. यदि जीवति तर्हि भद्रं प्राप्नुयात् ६. यदा कदा वा एकवारमागच्छ ७. त्वं यत्र कुत्र वा गच्छ ८. अहमपि त्वामनुयास्यामि ९. गच्छ गच्छसि चेत् कान्त! १०. सः हस्ते किमपि आनयति ११. मूर्खैः सह न भाषेथाः १२. पूर्वेद्युः मम जन्मनक्षत्रम् १३. अङ्ग! मिथ्या मा वद १४. रे! तन्न साम्प्रतम् १५. उच्चैर्मा वद, वदसि चेत् अन्योऽपि शृणुयात् १६. अधुना भुङ्क्ष्व १७. कदा त्वं पाठशालामगच्छः? १८. मुहुर्मुहुः पाठं पठ १९. पठनकाले अन्यत्र न पश्य २०. किं उद्दिश्य रोदिषि? ॥

---

## पाठः १०.

१. गृहस्य उपरिष्टात् मार्जारो वर्तते २. पुरः प्रवहति नदी ३. क्षेत्रं परितो वृतिर्वर्तते ४. ग्रामं समया वनमस्ति

---

6. यदा कदा वा=at any time. 7. यत्र कुत्र वा=any where. 13. अङ्ग!=a vocative particle. O! 14. रे!=vocative particle expressing disrespect. 14. साम्प्रतम्=proper. 20. उद्दिश्य=demanding.

2. पुरः=in front. 3. परितः=around. 4. समया=near.

५. दक्षिणेन वृक्षवाटिकामालापः श्रूयते ६. औषधं विना शान्तो रोगः ७. नाना फलानि सन्ति ८. कुशश्च लवश्च रामस्य पुत्रौ ९. रामाय वा कृष्णाय वा एतद्देहि १०. चिरं चिन्तय ११. तथा भवतु १२. चिराय प्रतिबुद्धोऽहम् १३. मुहुर्मा मा पृच्छ १४. कर्तव्यं झटिति कुरु १५. भोः! तूष्णीं आस्स्व १६. ननु अहं ब्रवीमि १७. श्वः प्रातः तं द्रक्ष्यति भवान् १८. सर्वेऽपि भिक्षुका युगपत् आगताः १९. त्वं पृथक् तिष्ठ २०. पठितुं जानासि किम्?

---

## अथ कालवर्गः ॥ ४ ॥

a

### पाठः ११.

१. सुखकरोऽयं कालः २. अद्य सोमवासरः ३. श्वः सूर्योपरागः ४. द्वादश मासा एको वत्सरः ५. मनुष्याणां आयुः स्वल्पमेव ६. तदपि संपूर्णं चेत् शतं वर्षाणि ७. मध्याह्ने सूर्यं न पश्येत् ८. सः दिवा स्वपिति ९. दिवसस्य

---

5. दक्षिणेन वृक्षवाटिकाम्=in the right side of a garden. 7. नाना=various. 14. झटिति=soon. 15. तूष्णीम्=silently. 18. युगपत्=at the time. 19. पृथक्-separately.

5. आयुः=duration of life. 8. दिवा=by day.



षष्टिर्घटिकाः १०. स रात्रौ जागर्ति ११. पूर्वेद्युः तस्य विवाहः संवृत्तः १२. निशीथे पिशाचाः सञ्चरन्ति १३. ऋतवः षट् १४. वसन्ते पुष्पाणि विकसन्ति १५. ग्रीष्मे आतपोऽधिकः १६. वर्षासु वृष्टिः पतति १७. यदा जननं तदा मरणं निश्चितम् १८. शरदि जलं निर्मलं भविष्यति १९. हेमन्ते शिशिरे च नीहारः पतति २०. दुर्भिक्षे क्लिश्यन्ते जनाः ॥

---

### पाठः १२.

१. अतिमहतः प्रत्यूषस्य ब्राह्मो मुहूर्त इति नाम २. अहोरात्रं वन्ध्यं न कुर्यात् ३. प्रातः स्नान्ति ब्राह्मणाः ४. परेद्यवि यत्कर्तव्यं तदद्यैव कर्तुं यतेत ५. येन वार्धके सुखं वसेत्तत्कार्यं यौवन एव कुर्यात् ६. मम पञ्चसप्ततिर्वर्षाणि जीवितमिति ज्योतिर्विदोऽवदन् ७. जातस्य मम पञ्चविंशोऽयं वत्सरः ८. अस्याः स्त्रिया अष्टादश वर्षाणि अभवन् ९. यामस्य घटिकाः सार्धाः सप्त १०. स्नात्वा क्षणेन आगच्छ ११. प्रातः कुकुटो रौति १२. चैत्रे मासि गृहे-

---

12. निशीथः=midnight. 20. दुर्भिक्षः=famine.

1. प्रत्यूषः = early morning. 2. अहोरात्र = day and night. 4, परेद्यवि = to-morrow. 9. यामः = jama or $\frac{1}{8}$ part of a day.

गृहे गौर्या उत्सवः क्रियते १३. तदा गृहस्वामिनी सुवासिनीभ्यः सायं हरिद्रां कुङ्कुमं गन्धान् माल्यानि मोदकांश्च उपहरति १४. ज्येष्ठमासस्य पूर्णिमायां सभर्तृकाः स्त्रियो वटं पूजयन्ति १५. शुक्लपक्षस्य षष्ठ्यां तस्य गृहे विवाहोत्सवो भविष्यति, १६. पञ्चदश दिनानि एकः पक्षः १७. अद्य वृषभमासस्य पञ्चदशो दिवसः १८. एकस्य अहोरात्रस्य चतुर्विंशतिर्घण्ठाः १९. एकस्या घटिकायाः षष्टिः पलानि २०. प्रतिपदि न लिखेन्न पठेदिति प्राचीनानां संप्रदायः ॥

## अथ ग्रहवर्गः ॥ ५ ॥

—(o)—

### पाठः १३.

१. आदित्याद्या नव ग्रहाः २. तेषु सूर्यस्य प्रकाशोऽधिकः ३. तस्य किरणाः चण्डाः ४. चन्द्रिका शीतला ५. मेघा वर्षन्ति ६. तटित् क्षणं स्फुरति ७. पूर्वेद्युर्मण्टपस्योपरि अशनिरपतत् ८. घनीभूतं जलं करका भवति ९. धूमकेतुः अशुभसूचको ग्रहः १०. अग्नेः प्रभा रात्रावधिका भवति

19. पलम् = $\frac{1}{60}$th part of a घटिका, விநாடி.
6. तटित् = lightning. 7. अशनिः = thunder. 8. करका = a hail. 9. धूमकेतुः = a comet.



११ आकाशः सर्वत्र व्याप्तः १२. बुधः सोमस्य पुत्रः १३. देवानां गुरुर्बृहस्पतिः १४. दैत्यानामुपाध्यायः शुक्रः १५. भौमस्य वासरे नवीनं कार्यं नाऽऽरब्धव्यम् १६. वृष्टेर्धाराः पतन्ति १७. हिमघनमुपलवत्कठिनं वर्तते; किंतु तत्सूर्यातपेन विलीयते १८. उदकं सर्वेषां प्राणिनां जीवातुः १९ ईश्वरः अप एव अग्रे ससर्ज २०. अस्मिन्वर्षे वृष्टिः सुसमयेऽभवत् ॥

## अथ मनुष्यवर्गः ॥ ६ ॥

—(*)—

### पाठः १४.

१. आत्मा द्विविधः, जीवात्मा परमात्मा चेति २. परमात्मन ईश्वर इति नाम ३. ईश्वरस्य जननं मरणं च न स्तः; स नित्यः ४. तस्य देहस्यापि नाशो नास्ति ५. तस्य शरीरं अवयवाश्च न सन्ति इति केषांचिन्मतम् ६. जीवो देहात् पृथग्वर्तते ७. स देहे स्थित्वा सुखं दुःखं च भुङ्क्ते ८. जीवस्यापि जननमरणे न स्तः; किन्तु ते तद्देहस्यैव ९. देहस्य अनेके अवयवाः सन्ति १०. सर्वेष्वप्यवयवेषु शिरः प्रधानम् ११. मुखे द्वात्रिंशत् दन्ता वर्तन्ते १२. आस्यस्य

17. हिमघनम् = Ice. 18. जीवातुः = life existence.
12. आस्यम् = mouth.

अन्तर्जिह्वा वर्तते १३. चक्षुर्भ्यां रूपं पश्यन्ति जनाः १४. श्रोत्राभ्यां शब्दं शृण्वन्ति १५. नासिकया गन्धं जिघ्रन्ति १६. रसनया रसं रसयन्ति १७. त्वचा स्पर्शं जानन्ति १८. दन्तैः खाद्यं दशन्ति १९. दंष्ट्राभिस्तदेव पुनः चूर्णयन्ति २०. हस्तौ अङ्गुलीनां साहाय्येन ग्राह्यं गृह्णीतः ॥

---

## पाठः १५.

१. नेत्रयोस्तारके तरले स्तः २. रुदत्या बालाया नयनाभ्यामश्रु स्रवति ३. सा तं युवानं कटाक्षेण निरीक्षते ४. युवत्या वेण्याः पुष्पाणि गलन्ति ५. शिशुः प्रसृतिमितं क्षीरं पिबति ६. पवर्गीयान्यक्षराणि ओष्ठाभ्यामुच्चार्यन्ते ७. गायकस्य स्वरः कोकिलस्येव मधुरोऽस्ति ८. स्त्रियः कट्यां काञ्चीं कण्ठे निष्कं च धारयन्ति ९. मुष्टिना शिष्यं शिरसि कुट्टयति गुरुः १०. वृक्षात्पतितस्य नुः अस्थीनि भग्नानि ११. तस्य त्वगग्निना दग्धा १२. कृत्तायाः कनिष्ठिकाया रुधिरं स्रवति १३. माता बालकाय प्रदेशिन्या शुकं दर्शयति १४. कण्टकेनाहं पादमूले विद्धः १५. मम चरणौ ग्रामगमनेन

---

16. रसयति = He tastes. 1. तारका = the pupil of the eye. 3. कटाक्षः = a glance. 4. वेणी = a braid of hair. 5. प्रसृतिः = the palm. 9. मुष्टिः = the fist, closed hand. कुट्टयति = knocks. 10. नुः = man's. 13. प्रदेशिनी = a fore-finger. 14 पादमूलम् = the heel.



सरुजौ १६. राक्षसाः मांसमदन्ति १७. मूत्रं पुरीषं च अप्सु नोत्सृजेत् १८. तस्या नासारन्ध्रात् शिङ्घाणं गलति १९. शिशोर्मुखात् लाला गलति २०. बालः स्तनं धयति २१. तापसो जटां धारयति २२. शवं श्मशानं नयन्ति बान्धवाः ॥

---

## पाठः १६.

१. नार्यो ललाटे तिलकं धारयन्ति २. अञ्जलिना जलं पिबति ३. माता बालं कपोले चुम्बति ४. मम दृष्टिः सुदूरतः प्रसरति ५. हनुमतो हनुः वज्रप्रहारेण किञ्चिदभज्यत ६. योषायाः केशाः आ गुल्फात् लम्बन्ते ७. शुनो रोम मृदु ८. शिखां बधान ९. कृष्णस्य ललाटे अलका लम्बन्ते १०. रामः काकपक्षाभ्यां शोभते ११. पुरुषस्य मुखे श्मश्रु वर्तते

---

18. शिङ्घाणम् = the mucous of the nose. 19. लाला = Saliva, spittle. 21. जटा = clotted hair.

1. ललाटम् = the fore-head. 2. अञ्जलिः = the two palms of the hands joined together. 3. कपोलः = cheek. चुम्बति = kisses. 4. दृष्टिः = the sight of the eye. 5. हनुः = the chin. 6. गुल्फः = the ankle. 8. शिखा = a lock of hair. 9. अलकः = a curl. 10. काकपक्षः = the side lock of the hair of the head. 11. श्मश्रु = beard.

१२. घर्मात् देहे स्वेदो जायते १३. कक्षेण पुस्तकं वहति बालकः १४. भयात् हृदयं वेपते १५. लगुडप्रहारेण तस्य वक्षसि क्षतं जातम् १६. मम उदरे रुजा वर्तते १७. सः जठरं अन्नेन पूरयति १८. नारायणस्य नाभौ पद्ममुदभूत् १९. सा स्कन्धेन जलपूर्णं घटं आनयति २०. भयेन ऊरू कम्पेते २१. तस्या नखाः रक्तवर्णाः सन्ति २२. चपेटेन भृत्यं प्रहरति २३. स माणवकः मणिबन्धे घटिकायन्त्रं धारयति २४. तस्य मस्तिष्कं नास्ति, अत एव बुद्धिहीनः २५. यस्य जङ्घायां बलमस्ति स वेगेन गन्तुं शक्नोति ॥

---

## अथ संख्यावर्गः ॥ ७ ॥

——:-(*)-:——

### पाठः १७.

१. एक एव देवः सर्वेश्वरः २. एका स्त्री ३. एकं गृहम् ४. द्वौ पुरुषौ ५. द्वे स्त्रियौ ६. द्वे फले ७. त्रयो

---

12. स्वेदः=perspiration. 13. कक्षः= armpit. 22. चपेटः = the palm of the hand with the fingers extended. 23. मणिबन्धः = the wrist. घटिकायन्त्रम् =a watch. 24. मस्तिष्क=ʀ brain. 25. जङ्घा = calf of the leg, கண்டைச்சதை.



वृषभाः ८. तिस्रो धेनवः ९. त्रीणि सरांसि १०. चत्वारो वेदाः ११. चतस्रः अबलाः १२. ब्रह्मणः चत्वारि मुखानि १३. पञ्च गजाः १४. पञ्च करिण्यः १५. पञ्च भूतानि १६. षट् ऋतवः १७. सप्त द्वीपाः १८. अष्टौ दिशः १९. नव रत्नानि २०. दश रथाः २१. एकादश रुद्राः २२. द्वादश आदित्याः २३. कश्यपस्य त्रयोदश भार्याः २४. चतुर्दश विद्याः २५. पञ्चदश तिथयः २६. षोडश ऋत्विजः २७. सप्तदश, अष्टादश, एकोनविंशतिर्वा ब्राह्मणः आह्वातव्याः २८. द्विगुणिता दश विंशतिः २९. दशभिः सङ्कलिताः पञ्च पञ्चदश ३०. नवभिः आहताः षट्, चतुष्पञ्चाशत् भवन्ति ३१. विंशतेर्वियुता अष्टौ द्वादश ॥

---

### पाठः १८.

एकविंशतिः २१. द्वाविंशतिः २२. त्रयोविंशतिः २३. चतुर्विंशतिः २४. षाड्विंशतिः २६. अष्टाविंशतिः २८. नवविंशतिः—एकोनत्रिंशत् २९. त्रिंशत् ३०. द्वात्रिंशत् ३२. त्रयस्त्रिंशत् ३३. अष्टात्रिंशत् ३८. नवत्रिंशत्—एकोनचत्वारिंशत् ३९. चत्वारिंशत् ४०. द्विचत्वारिंशत्—द्वाचत्वारिंशत् ४२. त्रिचत्वारिंशत्—त्रयश्चत्वारिंशत् ४३. अष्टाचत्वारिंशत्—अष्टचत्वारिंशत् ४८.

---

27. आह्वातव्यः = liable to be invited. 28. द्विगुणितः = multiplied by two. 29. सङ्कलितः = added with 30. आहतः= multiplied. 31. वियुतः= minus from.

द्विपञ्चाशत् – द्वापञ्चाशत् ५२. त्रिपञ्चाशत् – त्रयःपञ्चाशत् ५३. अष्टपञ्चाशत् — अष्टापञ्चाशत् ५८. नवपञ्चाशत् — एकोनषष्टिः ५९. द्विषष्टिः — द्वाषष्टिः ६२. त्रिषष्टिः — त्रयःषष्टिः ६३. अष्टषष्टिः — अष्टाषष्टिः ६८. द्विसप्ततिः — द्वासप्ततिः ७२. अशीतिः ८०. द्व्यशीतिः ८२. त्र्यशीतिः ८३. चतुरशीतिः ८४. षडशीतिः ८६. अष्टाशीतिः ८८. नवाशीतिः-एकोननवतिः ८९. द्विनवतिः — द्वानवतिः ९२. त्रिनवतिः — त्रयोनवतिः ९३. नवनवतिः — एकोनशतम् ९९ ॥

---

## पाठः १९.

शतम् 100. एकाधिकशतम् — एकोत्तरशतम् — एकशतम् 101. द्विशतम् 102. त्रिशतम् 103. दशशतम् — दशाधिकशतम् — दशोत्तरशतम् 110. द्वे शते — द्विशते 200. त्रीणि शतानि — त्रिशतानि 300. सहस्रम् 1000. द्वे सहस्रे 2000. त्रीणि सहस्राणि 3000. त्रिंशदधिकशतम् 130. नवनवत्यधिकशतम् — एकोनद्विशते 199. त्र्यशीत्यधिकत्रिशतानि 383. षण्णवत्यधिकसप्तशतानि 796. सप्तत्युत्तरसहस्रम् 1070. षट्षष्ट्युत्तरषट्शताधिकषट्सहस्राणि 6666. दशसहस्राणि — अयुतम् 10,000, ten thousands.



लक्षम् – नियुतम् 100,000, a lac. प्रयुतम् 1,000,000, one million. कोटिः 10,000,000, a crore, ten millions. अर्बुदः 100,000,000, one hundred millions. महार्बुदः — पद्मम् – अब्जम् 1,000,000,000, one thousand millions. खर्वः 10,000,000,000, ten thousand millions. निखर्वः 100,000,000,000, one hundred thousand millions. महापद्मम् 1,000,000,000,000, a billion. शङ्कुः – महाखर्वः 10,000,000,000,000, ten billions. शङ्खः — समुद्रः 100,000,000,000,000, a hundred billions. महाशङ्खः — अन्त्यः 1,000,000,000,000,000, a thousand billions. हाहा – मध्यम् 10,000,000,000,000,000, ten thousand billions. महाहाहा – परार्धम्, 100,000,000,000,000,000, one hundred thousand billions. धुनम् one million billions. महाधुनम् ten million billions. अक्षौहिणी one hundred million billions. 100,000,000,000,000,000,000.

---

## पाठः २०.

पादोनम् $\frac{3}{4}$. अर्धम् $\frac{1}{2}$. पादः तुरीयो भागः $\frac{1}{4}$. अष्टमांशः $\frac{1}{8}$. कला – षोडशो भागः $\frac{1}{16}$. सपादः $1\frac{1}{4}$. सार्धः $1\frac{1}{2}$. पादोनौ द्वौ $1\frac{3}{4}$. सपादौ द्वौ $2\frac{1}{4}$. सार्धौ द्वौ $2\frac{1}{2}$. सार्धानि त्रीणि $3\frac{1}{2}$. पादोनानि

पञ्च $4\frac{3}{4}$. अष्टमांशाधिका: सार्धसप्त $7\frac{5}{8}$. एकादशकलासहिता: अष्टौ $8\frac{11}{16}$. कलान्यूना द्वादश $11\frac{15}{16}$. प्रथमः 1st. द्वियीयः 2nd. तृतीयः 3rd. चतुर्थः 4th. पञ्चमः 5th. षष्ठः 6th. सप्तमः 7th. अष्टमः 8th. नवमः 9th. दशमः 10th. एकादशः 11th. द्वादशः 12th. विंशतितमः--विंशः 20th त्रिंशत्तमः--त्रिंशः 30th. शततमः 100th. सहस्रतमः 1000th.

---

# अथ जलवर्गः ॥ ८ ॥

## पाठः २१.

१. अब्धेर्जलं लवणम् २. उदधौ बृहत्य ऊर्मयो वर्तन्ते ३. पर्वतेभ्यो नद्य उत्पद्यन्ते ४. शरदि सरित्सु पुलिनानि उद्भवन्ति ५. उडुपेन नदीं तरन्ति जनाः ६. सांयात्रिको नावि उपविश्य द्वीपान्तरं गच्छति ७. बाष्पनौका जलवर्त्मना त्वरितं गच्छति ८. कैवर्ता जालानि जले प्रसार्य मत्स्यान् गृह्णन्ति ९. मीना जले प्लवन्ते १०. अर्णवस्य तलं निम्नं

---

4. पुलिनन् = மணல் மேடு. 5. उडुपम् = raft, a float தோணி. 6. सांयात्रिकः—a sea merchant. 7. बाष्पनौका = steamer. 8. कैवर्तः = a fisherman. जालम् = a net.



वर्तते ११. गाधोऽयं पल्वलः १२. जलस्थो नक्रो बलवान् भवति १३. तिमिर्बृहन्तो मत्स्यान् गिलति १४. तमपि तिमिङ्गिलो ग्रसते १५. तस्याप्यन्यो भक्षकोऽस्ति, तस्य तिमिङ्गिलगिल इति नाम १६. न बाहुभ्यां नदीं तरेत् १७. कलुषं जलं सस्यानां हितम् १८. स्वच्छं पानीयं पानाय हितम् १९. सरसि भेका रटन्ति २०. नीचाः शंबूकान् कर्कटांश्च आहारायोपयुञ्जते ॥

---

## पाठः २२.

१. पुष्करिण्यां शैवालमस्ति, तत् जलमाच्छादयति २. तटाके इन्दीवरं प्ररोहति ३. नद्याः पात्रं विशालमस्ति ४. अस्मिन्ग्रामे बहवः कूपाः सन्ति ५. जलानां परस्परं सङ्घट्टनेन फेन उत्पद्यते ६. नदीनां पारगमनाय संक्रमा बध्यन्ते ७. आलवाले सिक्तं जलं पक्षिणः पिबन्ति ८. सारसा बिसं खादन्ति ९. कच्छपोऽङ्गानि कदाचित्संहरति १०. परिखा द्विपुरुषी

---

12. नक्रः = a crocodile. 17. कलुषम् = muddy. 19. भेकः = a frog. 20. शम्बूकः = a snail. कर्कटः = a crab.

1. शैवालम् = moss, கீரிப்பாசி. 2. इन्दीवरम् = a blue lotus. 3. पात्रम् = bed of a river. 5. फेनः = a foam. 6. संक्रमः = a bridge. 7. आलवालम् = a basin for water, round the root of a tree, பாத்தி. 8. बिसम् = a root of lotus. 10. परिखा = a ditch, அகழ்.

वर्तते ११. कूपादुदकमुदञ्चयति बाला १२. शङ्खो देवस्य पूजायै उपयुज्यते १३. वाप्यां पङ्कोऽस्ति १४. कह्लारं रक्तमस्ति १५. कुमुदं सितम् १६. द्रोण्या मध्ये कूपकोऽस्ति १७. शुक्तिषु मुक्ताफलान्युद्भवन्ति १८. नद्यास्तीरे अश्वत्थवृक्षोऽस्ति १९. जलेऽवतीर्णानां पादान् जलूका गृह्णाति २०. गिरेर्निर्झरः पतति ॥

---

## बन्धुवर्गः ॥ ९ ॥

### पाठः २३.

१. के के तव बान्धवाः ? २. अभिमन्योर्मातुलः श्रीकृष्णः ३. तस्य मातामहो वसुदेवः ४. अयं मम जामातुर्भ्राता ५. सः पितृष्वसुर्गृहं गच्छति ६. तस्य तिस्रो दुहितरः ७. मम भागिनेयस्य चत्वारः सूनवः ८. रामस्य पुत्र्यः कृष्णस्य स्नुषाः ९. ताः परस्परं यातरो भवन्ति १०. कन्यायाः

---

13. वापी=a big well. 14. कल्हारम् = a red water-lily. 15. कुमुदः = a white water-lily. 16. कूपकः = a mast of a vessel, பாய்மரம். 19. जलूका=a leech, அட்டை.

2. मातुलः=a mother's brother. 3. मातामहः=a mother's father. 5. पितृष्वसा= a father's sister. 6. दुहिता = a daughter. 7. भागिनेयः = a sister's son. 8. स्नुषा = a daughter-in-law. 9. याता=a husband's brother's wife.



शुल्कं न गृह्णीयात ११. मम भार्या यमलौ प्रासूत १२. रामभद्रो मम यवीयान् भ्राता १३. श्रीनिवासो मम ज्येष्ठः १४. शिशुपालो युधिष्ठिरस्य मातृष्वसेयः १५. कौन्तेयाः श्रीकृष्णस्य पैतृष्वस्रीयाः १६. मम श्वशुरस्य श्वः षष्ठ्यब्दपूर्तिर्भविता १७. सीता श्वश्रूं वन्दते १८ तव श्यालः कुत्र वर्तते १९. स चतस्रो जाया उदवहत् २० ताः सर्वाः सपत्न्यः परस्परं भगिन्य इव स्नेहेन वर्तन्ते ॥

---

### पाठः २४.

१. लक्ष्मणो जानक्या देवरः २. प्रातिवेश्येन सह हेलन आवश्यकः ३. विधुरोऽन्यां पत्नीं परिणयेत् ४. विधवा अन्यं पतिं नोद्वहेत् ५. पञ्च दंपतयो भोजनाय आमन्त्रिताः ६. गर्भिण्याः स्त्रिया अष्टमोऽयं मासः; आगामिनि मासे सा

---

11. यमलौ = a pair, a twin. 14. मातृष्वसेयः = a son of mother's sister, मावशीचा ल्योक. 15. पैतृष्वस्रीयः=a son of father's sister, अताचा ल्योक. 16. श्वशुरः= father-in-law. 17. श्वश्रूः=mother-in-law. 18. श्यालः=a wife's brother. 19.जाया=a wife. 20. सपत्नी= a woman whose husband has other wives, i. e., fellow-wife, சக்களத்தி.

1. देवरः = a husband's brother. 2. प्रातिवेश्यः= a neighbour. 3. विधुरः = a widower. दंपती = husband and wife. 6. गर्भिणी= a pregnant woman.

प्रसुवीत ७. पुंश्चलीं निन्दन्ति जनाः ८. पतिव्रतां सर्वे स्तुवन्ति ९. नर्तकी भरतशास्त्रं सम्यक् जानाति १० गायको वीणां वादयति ११. अस्या जरठाया अशीतिर्वर्षाणि १२. अर्जुनस्य नकुलः सापत्नभ्राता १३. तस्य भीमसेनः सगर्भ्यः १४. देवस्योत्सवे वेश्यानां नर्तनं भविष्यति १५. पितुः पिता पितामहः १६. पितुर्माता पितामही १७. मातुलस्य भार्या मातुलानी १८. पितुर्भ्राता पितृव्यः १९ पुत्रस्य पुत्रः पौत्रः २०. पुत्रस्य पुत्री पौत्री २१. दुहितुः पुत्रो दौहित्रः २२. दुहितुः पुत्री दौहित्री ॥

---

## अथ रोगादिवर्गः ॥ १० ॥

### पाठः २५.

१. रोगः प्राणानपहरति २. व्याधिभिः शरीरं कृशं जायते ३. खर्वः प्रांशौ वृक्षे स्थितं फलमपचेतुं न शक्नोति ४. अन्धो रूपं न पश्यति ५. बधिरः शब्दं न शृणोति

---

7. पुंश्चली = an unchaste woman. 8. पतिव्रता = a virtuous wife. 11. जरठा = an old woman. 12. सापत्नभ्राता = a step-brother. 13. सगर्भ्यः = a brother born by the same father and mother. 14, वेश्या = a harlot.
3. खर्वः = a dwarf.



६. तुन्दिलस्त्वरितं गन्तुं न शक्नोति ७. खञ्जो गन्तुं न समर्थः ८. जलपानेन हिक्का शाम्यति ९. स उदरशूलेन क्लिश्यते १०. उन्मादाच्चित्तं दूषयति ११. विरेचनेन कोष्ठं शुद्धं भवति १२. देहे रक्तं क्षीणं चेत् श्वयथुरुत्पद्यते १३. विषूची ग्रन्थिज्वरश्च दुश्चिकित्सौ रोगौ १४. अनामयं ऐश्वर्यादप्यावश्यकम् १५. समर्थो वैद्यो रोगस्य निदानं ज्ञात्वा अगदं ददाति १६. तेन औषधेन रोगस्य परिहारो भवति १७. व्याधितस्य चिकित्सा कर्तव्या १८. जरा रूपं हरति १९. पामनो अङ्गानि कण्डूयति २०. ज्वरः अनेकविधः २१. तस्य केशेषु अकाले पलितं जातम् ॥

---

6. तुन्दिलः = a man having elevated navel. 7. खञ्जः = a lame, 8. हिक्का = hiccough, விக்கல். 10. उन्मादः = madness. 11. विरेचनम् = purging. कोष्ठम् = bowels. 12. श्वयथुः = swelling. 13. विषूची = cholera. ग्रन्थिज्वरः = plague. 14. अनामयम् = health. 15. निदानम् = first cause. 19. पामनः = a person suffering from herpes, சொறியுள்ளவன்.

# अथ वाणिज्यसामान्यवर्गः ॥ ११ ॥

—x—

## पाठः २६.

१. वणिक् वाणिज्येन धनमर्जयति २. शतेन रूप्यैः क्री-
तानि वस्तूनि पञ्चविंशत्यधिकशतेन (१२५) विक्रीणाति वैश्यः ३.
पदार्थानां आनयने पञ्च रूपिकाः व्ययो भवति ४. उर्वरिताः
विंशती रूपिकास्तस्य आयः ५. एवं वाणिज्ये धनसम्पा-
दनप्रकारः ६. केचन कुसीदेन धनमार्जयन्ति ७. यः
ऋणं ददाति स उत्तमर्णः ८. यः ऋणं गृह्णाति स अधमर्णः
९. अधमर्णः स्वगृहीतस्य धनस्य, शतस्य एका रूपिकेति प्रकारेण
मासिकीं वृद्धिं उत्तमर्णाय ददाति १०. इदानीं पञ्चविंशति-
सहस्र (२५,०००) रूप्यमूल्यकाः पदार्थास्तस्य व्यापारे वर्तन्ते
११. ऋणतया तेन स्वीकृताः पदार्था नाणकानि च मिलित्वा
दशसहस्राणि (१०,०००) भवन्ति १२. अस्यां विपण्यां
अनेकविधा आपणा विद्यन्ते ॥

---

1. वणिक् = a merchant, वाणिज्यम् = traffic, 2. वस्तु = goods, 3. व्ययः = expense, 4. उर्वरितम् = remaining, 6. कुसीदम् = the profession of usury, 7. ऋणम् = debt, उत्तमर्णः = creditor, 8. अधमर्णः = debtor, 9. शतस्यैका रूपिकेति प्रकारेण = at one per cent, मासिकी = monthly, 10. व्यापारः = business, 11. नाणकम् = a coin, 12, विपणिः = a market, आपणः = a shop.



## पाठः २७.

१. द्वादश पैका एका आणका २. षोडश आनका एका
रूपिका ३. चतस्रः पैका एको दुड्डुः ४. षट् पैका एका
अर्धाणका ५. कचित्पैकात्रयस्य पैसा इति नाम ६. एकस्य
रूप्यस्य समानभारवती एका तोला ७. तोलात्रयमितं पलम्
८. अष्टौ पलानि एकः शेटकः [शेरः] ९. पञ्च शेरा एको
वीसः १०. पञ्चपलमित एकः कुडुवः ११. अष्टौ कुडुवा
एकः प्रस्थः १२. प्रस्थद्वयमित एक आढकः १३. धान्यानि,
तैलादीनि द्रवद्रव्याणि च, प्रस्थादिभिर्मीयन्ते १४. तिन्त्रिण्या-
दयो मूर्ताः पदार्थाः तुलया तोल्यन्ते १५. कुडुवादीनि मान-
पात्राणि काष्ठेन लोहेन वा क्रियन्ते १६. पलं सेरः वीसः एव-
मादीनि तोलनसाधनानि लोहखण्डैर्निर्मीयन्ते १७. तुलायाः

---

1. पैका = a pie, பை. 2. आणका–आनका–आनकः–अना = an anna, ஒரு அணா. 3. दुड्डुः = துட்டு. 5. पैसा = pice, பைசா. 6. तोला = tola, தோலா. 7. पलम् = பலம். 8. शेटकः–शेरः = seer, சேர். 9. वीसः = viss, வீசை. 10. कुडुवः = azhakku, ஆழாக்கு 11. प्रस्थः = padi, படி. 12. आढकः = marakkal, மரக்கால். 13. धान्यम् = a corn in general. द्रवद्रव्यम् = liquid matter. 14. मूर्तम् = solid, கெட்டியான. तुला = a scale, தராசு. 15. मानपात्राणि = measuring vessels, அளவுபாத்திரம். 16. तोलनसाधनानि = stones of weight. 17. घटा = a scale-pan, தராசுத் தட்டு.

एकस्यां घटायां तोलनीयं शर्करादिकम्, अपरस्यां घटायां तोलन-खण्डानि च श्रेष्ठी प्रक्षिप्य तोलयति १८. यदा द्वे अपि घटे-समे भवतस्तदा तावत्परिमितः स पदार्थ इति ज्ञेयम् १९. केषु-चिद्देशेषु धान्यान्यपि तोल्यन्ते २०. राजसेवामपेक्ष्यापि वा-णिज्यमुत्तममिति केषां चिन्मतम् ॥

---

## अथ धान्यादिवर्गः ॥ १२॥

—(०)—

### पाठः २८.

१. अस्यां विपण्यां के के पदार्था लभ्यन्ते? व्रीहिः २. तण्डुलः ३. मुद्गः ४. माषः ५. चणकः ६. कुलित्थः ७. बर्बरः ८. धान्याकम् ९. तिन्त्रिणी १०. मरिचम् ११. दीर्घमरीचिका १२. जीरकम् १३. सिद्धार्थः १४. सर्षपः १५. तिलः

---

श्रेष्ठी =a merchant. 20. राजसेवा = Royal service.

1. paddy, நெல். 2. rice, அரிசி. 3. green gram, பயறு. 4. black gram, உளுந்து. 5. Bengal gram, பச்சைக்கடலை. 6. horse gram, கொள்ளு. 7. beans, மொச்சை. 8. coriander, கொத்தமல்லி. 9. tamarind, புளி. 10. pepper, மிளகு. 11. chilly, மிளகாய். 12. cumin seed, சீரகம். 13. white mustard, வெள்ளைக் கடுகு. 14. mustard. 15. sesamum, எள்ளு.



१६. अजमोदा १७. हरिद्रा १८. आर्द्रकम् १९. नागरम् २०. हिंगु २१. लवणम् २२. गुडम् २३. सितशर्करा २४. खण्डविकारः २५. तैलम् २६. घृतम् २७. दलम्-दाली २८. कर्पूरः २९. घनसारः ३०. एला ३१. लवङ्गम् ३२. जातीफलम् ३३. पृथुकः ३४. यावनालः ३५. प्रियङ्गुः ३६. गोधूमः एवमाद्याः पदार्था अत्र विपण्यां विक्रीयन्ते ॥

---

## अथ वस्त्रवर्गः ॥ १३ ॥

:-(*):

### पाठः २९.

१. इदं कौशेयं सपादद्विशेरतुलितम् २. शेरस्य मूल्यं अष्टादश रूपिकाः ३. अये तुन्नवाय! अस्याः कुमार्याः अर्धोरुकाय

---

16. ajwan, ஓமம். 17. turmeric, மஞ்சள். 18. ginger, இஞ்சி. 19. dry ginger. 20. asafœtida. 21. Salt. 22. jaggery, வெல்லம். 23. white gugar. 24. sugar candy. 25. oil. 26. ghee. 27. dholl, பருப்பு. 28. camphor, சூடம். 29. பச்சைக்கற்பூரம். 30. cardamom, ஏலக்காய். 31. clove, கிராம்பு. 32. nut-meg. 33. அவல், पोहे. 34. maize, சோளம். 35. millet, தினை. 36. wheat.

1. कौशेयम् =silk cloth. 3. तुन्नवायः=a tailor. अर्धोरुकम् =a sort of petty coat, பாவாடை, परकर.

कियद्वस्त्रखण्डमपेक्षितं भवेत्? ४. अस्या वयः कियत्? ५. अस्या अष्टौ वर्षाणि जातानि ६. तथा चेत् अष्टावेव हस्ता अपेक्ष्यन्ते ७. पुरुषस्य **अन्तरीयाय** दश हस्तानि, **उत्तरीयाय** षड्हस्तानि इत्येवं प्रायो **वस्त्राणि** भवेयुः ८. युवतिभिः **कञ्चुको** ध्रियते ९. हस्तत्रयायामः तद्विगुणदैर्घ्यश्च **नीशारः** स्यात् १०. **तन्तुवायः** **कार्पाससूत्रैः पटान् वयति** ११. **कम्बलः ऊर्णाभिरूयते** १२. मृगरोमनिर्मितानां मृदूनामेव वस्त्राणां **राङ्कवम्** इति नाम १३. गाढेन वस्त्रेण **तिरस्करणी** तन्यते १४. इदानीं वस्त्राणि **वातुं** यन्त्राणि उत्पन्नानि १५. क्षालनाय नीतानि वस्त्राणि **रजकेन** आनीतानि किम्? १६. भिक्षुकाः **कन्थां** वसते १७. राजसेवकाः **उष्णीषं** शिरसि धारयन्ति १८. **क्षौमं वस्त्रं** सदा शुद्धम् ॥

---

7. अन्तरीयम् = lower garment. उत्तरीयम् = upper garment. वस्त्रम् = cloth. 8. कञ्चुकः = a jacket, bodice, சட்டை, ரவிக்கை. 9. हस्तत्रयायामः = three cubits broad. नीशारः = warm cloth, துப்பட்டி, पासोडी. 10. तन्तुवायः = a weaver. वयति = weaves. 11. कम्बलः = a blanket. ऊर्णा = woollen thread. 12. राङ्कवम् = woollen cloth. 13. तिरस्करिणी = a curtain. 14. वातुम् = to weave. यन्त्रम् = a machine. 15. रजकः = a washer-man. 16. कन्था = a rag, கந்தை. 17. उष्णीषम् = a hat, cap, a turban. 18. क्षौमं वस्त्रम् = linen cloth, நார்மடி.



# अथ आभरणवर्गः ॥ १४ ॥

## पाठः ३०.

१. एते आभरणापणा इव दृश्यन्ते २. **आम्** ३. इदानीं **निष्कानां** मूल्यं पञ्चदश रूपिकाः ४. अत्र **सुवर्णस्य रूप्यस्य** च खण्डा विक्रीयन्ते ५. अस्य **हेम्नो वर्णा** अष्टौ ६. द्वादशवर्णस्य हेम्नो **जाम्बूनदम्** इति नाम ७. एकतोलात्मकस्य जाम्बूनदस्य मूल्यं त्रयस्त्रिंशद्रूपिकाः ८. **रत्नकरम्बिताया** अस्याः **काञ्च्या** अर्घः कियान्? ९. इमे **अङ्गदे किङ्किणीजालसंवृते** १०. **रुचको** महाराष्ट्रीणामाभरणम् ११. आन्ध्रयोषितः **मञ्जीरं** धारयन्ति १२. चोल्यः **सौवर्णौ ताटङ्कौ** धारयन्ति १३. पुत्राय **पद्मरागकुण्डले**, स्नुषायै **वज्रखचिते तालपत्रे**, **कर्णमुकुरे** च क्रीत-

---

1. आभरणापणः = a jewel-shop. 2. आम् = yes 3. निष्कः = sovereign. 5. हेम = gold, பொன். वर्णः = carat (purity of gold), தங்கத்தின் மாற்று. वण. 7. जांबूनदम् = pure gold, தங்கம். 8. रत्नकरम्बितम् = fitted with jems, கல்லிழைத்த. काञ्ची = a zone, ஒட்டியாணம், पट्टा. 9. अङ्गदम् = a bracelet worn on the upper arm, பாஜோபந்து. किङ्किणी = a small jingling ball, சலங்கை, घुंघुर, जालम् = a cluster, கொத்து, घोस. 10. रुचकः = a golden necklace, காறை, सरी. 11. मञ्जीरम् = a bracelet worn on the foot, பாதசரம், पैंजणें. 12. ताटङ्कः–तालपत्रम् = ear-ring worn by women, காதோலை, तोड. 13. कुण्डलम् = ear-ring of men. वज्रखचितम् = fitted with diamonds.

ण्यानि १४. इदमङ्गुलीयकं मम तर्जन्या योग्यं स्यात् १५. इयं वधूः सीमन्ते धृतया वालपाश्यया नितरां शोभते १६. बालः प्रकोष्ठे सुवर्णकटकं पादे रौप्यशृङ्खलां च धारयति १७. मुक्ताहारो ग्रीवामलङ्करोति १८. मुकुटं राज्ञां शिरोभूषणम् १९. नासालङ्कारे स्थूलानि सप्त मुक्ताफलानि ग्रथितानि २०. इदं सौवर्णं कङ्कणं प्रवालैः सुवर्णगुलिकाभिश्च ग्रथितम् २१. अस्यां निषद्यायां ताम्रपात्राणि पित्तलपात्राणि अयसां पात्राणि शीसपात्राणि त्रपुपात्राणि च विक्रीयन्ते २२. वज्रं गोमेदकः पुष्परागः मरकतं पद्मरागः इत्यादीनि रत्नानि ॥

---

कर्णमुकुरम् = சந்திரமுருகு, चन्द्रमुरु. 14. अंगुलीयकम् = ring. 15. वालपाश्या = an ornament worn by women on the forhead, நுதலணி, शिसफूल. 19. नासालङ्कारः = nattu, mookkuthi &c. 20. कङ्कणम् = bangle. प्रवालः = coral, பவழம். सुवर्णगुलिका = a small golden ball. 21. निषद्या = a shop. ताम्रम् = copper. पित्तलम् = brass. अयः = iron, steel. शीसम् = lead. त्रपु = tin. 22. गोमेदकः = yellow jem. पुष्परागः = topaz. मरकतम् = emerald. पद्मरागः = ruby.



# अथ शाकवर्गः ॥ १५ ॥

—(*)—

## पाठः ३१.

१. सखे! परावृत्य पश्यात्र शाकापणान् २. अहो! स्त्रिय एवात्र शाकानि विक्रीणते ३. आनकस्य चत्वारि जम्बीरफलानि इति फलविक्रयणी कथयति ४. 'षट् ददासि किम्' इति तां पृच्छ ५. अस्मिन् कदलीस्तबके सार्धशतं शलाटवो वर्तन्ते ६. अस्मिन् भारे कियन्ति कदलीपत्राणि विद्यन्ते; अस्य मूल्यं च कियत्? ७. अस्मिन्सार्धे द्वे शते पत्राणि सन्ति; समग्रस्यास्य स्तोमस्य मूल्यं सपादरूपिका ८. तथाचेदर्घोऽल्प एव ९. किमर्थमियं कादल्याः पुष्पाणि नालाणि च विक्रीणाति; एतैः किं करणीयम्? १०. एतान्यपि शाकायोपयुज्यन्ते ११. मधुरालोः वीसस्य मूल्यं द्वे आणके १२. गोलालोः मणस्य मूल्यं अष्टमांशसहिते सार्धद्विरूपिके १३. इमानि उर्वारुकाणि कठोराणि १४. सुकुमाराणि भवेयुश्चेत् रुचिराणि स्युः १५. कर्कटी-

---

1. शाकापणः = vegetable market. 3. जंबीरफलम् = a lime fruit, எலிமிச்சம்பழம. 5. स्तबकः = bunch, தார், குலை. शलाटुः = unripe, காய். 6. भारः—स्तोमः = bundle, கட்டு. ९. नालम् = stalk, தண்டு. 11. मधुरालुः = sweet potato, சக்கரைவெள்ளிக் கிழங்கு, रातालु.. 12. गोलालुः = potato. मणः = a maund. 13. उर्वारुकम् = cucumber, வெள்ளேரிக்காய், वालूक. कठोरम् = full grown, முற்றின. 14, सुकुमारम् = young, இளசு. 15. कर्कटी = கக்கரிக்காய்,

उर्वारुकप्रभेद एव १६. अलुः केवलं शाकाय भवतीति न; अपि तु अलुपत्राण्यपि भवन्ति १७. सूरणम् अर्शोरोगस्य भेषजं भवति १८. अलाबुः गृञ्जनं शिग्रुश्च निषिद्धानि शाकानि १९. कारवेल्लः तिक्तः २०. मण्टपशिम्बकः भूशिम्बकः गुच्छशिम्बकः इत्याद्यनेकविधः शिम्बकः २१. सतीनकः शिम्बकजातीयः २२. पटोली वृन्ताकं कूष्माण्डः महामधुफला पनसः एवमादीनि शाकान्यत्र लभ्यन्ते २३. मारिषा बिन्दुपत्रकं च पत्रशाकम् ॥

---

काङ्कटी. 16. अलुः = சேப்பங்கிழங்கு, अलूचें गड्डे. 17. सूरणम् = கருணைக்கிழங்கு. 18. अलाबुः = bottle gourd, சுரைக்காய். गृञ्जनम् = garlic, வெள்ளைப்பூண்டு. शिग्रुः = drum-stick, முருங்கைக்காய், शेवगा. 19. कारवेल्लः = bitter gourd, பாகைக்காய். 20. मण्डपशिम्बकः = shed beans, பந்தலவரை, घेवडीशेङ्गा. भूशिम्बकः = நில அவரை, हुरलेकायि. गुच्छशिम्बकः = cluster beans, கொத்தவரை, गोवर्धनशेङ्गा. 21. सतीनकः = pea, பட்டாணிக்கடலை, वाटाना. 22. पटोली = snake gourd, புடலங்காய், पडवळी. वृन्ताकम् = brinjal, கத்தரிக்காய். कूष्माण्डः = white pumpkin, பூசணிக்காய், कोहळा. महामधुफला = red pumpkin, பரங்கிக்காய், भोंपळा. 23. मारिषा = அரைக்கீரை, माट. बिन्दुपत्रम् = முளைக்கீரை, पोकळा ।



# अथ भोजनवर्गः ॥ १६ ॥

## पाठः ३२.

१. पाकः सिद्धः किम्? २. सर्वः सज्जः; पश्य! निर्धूमो महानसः ३. एतस्मिन्फलके उपविश ४. सर्वेषां युष्माकं साग्राणि मोचापत्राणि आस्तृणामि ५. इतो द्रोणपात्राणि च स्थापयामि ६. भोः परिवेषक! शीघ्रं परिवेविड्ढि ७. एष परिवेवेष्मि ८. कीदृशः पाकस्त्वया कृतः? ९. पुरतः पत्रेषु परिविष्टानि पश्य १०. कदलीनालस्य दधिकोशम्भरी ११. उर्वारुकस्य दधिमिश्रा पक्वकोशम्भरी १२. नारिकेलस्य मर्दनम्

---

1. पाकः = cooking, சமையல், सैंपाक. सिद्धः—सज्जः = ready. 2. निर्धूमः = smokeless. महानसः = kitchen. 3. फलकः = a plank. 4. साग्रम् = with point, நுனியோடு கூடிய. मोचापत्रम् = plantain leaf. 5. द्रोणपात्रम् = a vessel of leaves, தொன்னை, डोणा. 6. परिवेषकः = one serving up food, பரிமாறுகிறவன். परिवेविड्ढि = serve up meals. 8. कीदृशः पाकः = what sort of preparation? 10. कदलीनालम् = வாழைத்தண்டு. दधिकोशम्भरी = தயிர்ப்பச்சடி. 11. पक्वकोशम्भरी = ராயத், रायत. 12. मर्दनम् = sauce, துவையல், चटणी.

१३. नानाविधाः **शाकाः** १४. **सूपश्च**, धात्रीफलानां करमर्दानाम् आम्रशलाटूनां च **लवणशाकश्च** १५. **भिण्डीनकखण्ड**युता **कथिला** १६. कूष्माण्डखण्डसहितं **दधितेमनम्** १७. गोलालोर्भृष्टम् १८. **कोशातक्या** मुद्गदालीसहितः **अम्लशाकः** १९. इत्येवमाद्याः पदार्थाः परिविष्टाः ॥

---

## पाठः ३३.

१. पश्य **नव्यं घृतं** स्रावयामि २. जिघ्र एतस्य गन्धम्; अयं क्रोशपर्यन्तं प्रसरति ३. **चित्रान्नं दध्योदनं मुद्गान्नं केसरान्नं** चेत्येवमादीन्यन्नानि ४. **फेणिका पूरिका** लड्डुका पोलिका



**शष्कुली अपूपः आनन्दगुलिका** चेत्येवमादीनि **भक्ष्याणि संयावपायसं** च परिवेक्ष्यन्ते ५. **गोधूमचूर्णैः** पोलिका क्रियते ६. सा मध्ये **पूरणेन** पूर्यते ७. इयमायसफलकस्योपरि पच्यते ८. माषचूर्णैः **पर्पटाः** क्रियन्ते ९. पूरिका **ऋजीषे** घृतेन पच्यते १०. केचित्तां **क्वथिते** क्षीरे क्लेदयन्ति ११. अपरे तु तां **षाडवे** क्लेदयन्ति १२. **रसाला** फेणिकाया **उपसेचनं** भवति; दध्योदनस्य तु लवणशाक उपसेचनम् १३. **अन्ने** मनुष्याणां शक्तिरवस्थिता १४. सम्यगुपविश्य भुङ्क्ष्व १५. यत्तुभ्यं रोचते तत्स्वीकुरु; यन्न रोचते तत्त्यज १६. किं त्वं दधि अपेक्षसे? उत तक्रम्? १७. भोजनानन्तरं सकृदेवाहं **ताम्बूलं** चर्वामि

---

13. शाकः=curry, கறி, भाजी. 14. सूपः=பருப்பு, वरण. धात्रीफलम्=emblic myrobalan, நெல்லிக்காய், अवळा. करमर्दः = களாக்காய். लवणशाकः = pickles, ஊறுகாய், लोणचं. 15. भिण्डीनकम्=வெண்டிக்காய், भेण्ड्या. कथिला=பருப்புக்குழம்பு, सांभार. 16. खण्डः—தான், फोडी. दधितेमनम्=மோர்க்குழம்பு, कढी. 17. भृष्टम्=roast, வருவல், उप्पेरी. 18. कोशातकी=பீர்க்கங்காய், दोडकी. अम्लशाकः=புளியிட்டகறி, अम्बटभाजी.

1. नव्यं घृतम् = fresh ghee. 3. चित्रान्नम्=புளியோதரை, चिंचभात. दध्योदनम्=தயிர்சாதம். मुद्गान्नम्=பொங்கல். केसरान्नम्=கேசரிபாத். 4. फेणिका=பேணி, पूरिका = பூரி.

शष्कुली=முறுக்கு, चकली. अपूपः=அப்பம், भाकर-घारगा. आनन्दगुलिका=சுகியன், शुक्रकुण्डा. भक्ष्यम् = a cake, பணிகாரம், पक्वान्न. संयावपायसम्=சேமியாபாயஸம், शेवांयाचीखीर. 5. गोधूमचूर्णम् =கோதும்பைமாவு. 7. आयसफलकम्=தோசைக்கல், तवा. 8. माषचूर्णम् =உளுத்தமாவு. पर्पटः= அப்பளம், पापड. 9. ऋजीषम् = a pan for frying cakes in oil etc., எண்ணெய்வாணெய், तेलतवा, 10. क्वथितम्=boiled. क्लेदयन्ति =they make wet, ஊரப்போடுகிறார்கள். 11. षाडवः= தேன்பாகு, राब. 12. रसाला= ஸ்ரீகண்டம், श्रीखण्ड. उपसेचनम्=auxiliary edibles used with the chief food such as pickles &c., ஊறுகாய் முதலிய தொட்டுக்கொள்ளுகிற பதார்த்தம். 16. तक्रम्= butter milk, மோர்.

१८. अहं खादिरसारं ताम्बूलेन सह भक्षयामि १९. केचन सदा ताम्बूलं चर्वन्ति; तन्मह्यं न रोचते २०. केचन धूमपत्रमपि सेवन्ते; तत्तु सुतरां न युक्तम् २१. न वयं मांसभुजः, अपि तु शाकाहाराः ॥

---

## अद्रिवर्गः ॥ १७ ॥

---*---

### पाठः ३४.

१. अयमद्रिः नितरामुन्नतोऽस्ति २. अस्मिन्ननेका गुहा वर्तन्ते ३. अस्य अनेकानि महोन्नतानि शिखराणि वर्तन्ते ४. शिलामयोऽयं शैलः; केचन पर्वता मृन्मया अपि वर्तन्ते ५. खनिषु सुवर्णादयो धातवो लभ्यन्ते ६. उपत्यकासु महान्ति काननानि विद्यन्ते ७. गिरौ क्वचित्क्वचित्स्थले कृषिः क्रियते ८. अनेकैः

---

18. खादिरसारः = catechu, காசிக்கட்டி, कात. 19. चर्वन्ति = they chew, மெல்லுகிறார்கள். 20. धूमपत्रम् = tobacco. 21. मांसभुक् = flesh eater, மாமிசம் சாப்பிடுகிறவன். शाकाहारः = vegetarian.

4. शिलामयः = full of stones. मृन्मयः = full of earth. 5. खनिः = a mine. 6. उपत्यका = a land near the foot of a mountain, தாழ்வரை.



वृक्षैर्निबिडस्य प्रदेशस्य वनमिति नाम ९. केचन पादपाः शतपादोन्नताः सन्ति १०. तेषां बुध्नाः पञ्चव्यामपरिणाहा वर्तन्ते ११. तरून् लता आरोहन्ति १२. केचन वृक्षा इन्धनायैवोपयुज्यन्ते १३. सारभूताः केचन गृहनिर्माणायोपयुज्यन्ते १४. वटवृक्षः पृथिव्याश्छत्रमिव शोभते १५. अस्य शाखाभ्यः शिफा लम्बन्ते १६. केषांचिद्वृक्षाणां निर्यासः सुगन्धिर्वर्तते १७. अस्मिन्नुद्याने मल्लिका मालती जातिः केतकी बकुलः करवीरः कुरवकः मन्दारः चम्पकः शेवन्तिका पुन्नागः इत्यादीनि पुष्पाणि सन्ति १८. नारिकेलवृक्षे प्रथमं, कुहली ततस्तस्यां पुष्पाणि, तेभ्यः फलानि च जायन्ते १९. एकैकस्यां कुहल्यां पञ्चाशतोऽप्यधिकानि फलानि भवन्ति २०. कदाचित्

---

8. निबिडः = dense, full. 10. बुध्नः = trunk, root of a tree. पञ्चव्यामपरिणाहः = five *vyama* broad. व्यामः = length of four cubits, நான்கு முழம் கொண்ட அளவு, பாகம், वांव. 12. इन्धनम् = fire wood. 13. सारभूतः = strong, வைரம். 14. वटवृक्षः = a banian tree. 15. शाखा = branch of a tree. शिफा = spikenard descending from banian &c. trees, ஆலமரம் முதலியவற்றின் விழுது, पारम्बी. 16. निर्यासः = gum, चीक· 17. मल्लिका = jasmine, மல்லிகை, मोगरा. मालती = great flowered jasmine, குடமல்லிகை, बटमोगरा. जातिः = ஜாதிப்பூ, जाई. केतकी = தாழை, केवडा. बकुलः = மகிழம்பூ. करवीरः = அரளிப்பூ, कण्हेरीचेंफूल. कुरवकः = மருதாணி, कोहांटा. चम्पकः = ஜம்பகைப்பூ, चांप्याचेंफूल. शेवन्तिका = ஜவந்திப்பூ. पुन्नागः = புன்னைப்பூ. 18 कुहली = co-co-pod, பாளை.

नारिकेलवृक्षे पञ्चषाः स्तबका भवन्ति २१. नारिकेलं शुष्कं चेत्फलं खर्परं विहाय तिष्ठति; तस्य नारिकेलबुद्बुद इति नाम २२. कदल्याः शलाटुः फलं पुष्पं त्वक् नालं चेत्येतानि सर्वाण्यपि मनुष्याणामुपयुक्तानि २३. खर्जूरस्य फलं मधुरम् २४. जम्बूफलं वानराणां प्रियम् २५. कपित्थफलानि गजानां प्रीतिकराणि ॥

---

### पाठः ३५.

१. पनसवृक्षे कदाचित् शताधिकान्यपि फलान्युद्भवन्ति २. उदुम्बरफलानामन्तः कृमयो वर्तन्ते ३. बदरीवृक्षः कण्टकैर्निबिडः ४. वेतसस्य फलानि अम्लानि ५. निम्बस्य त्वक् पत्राणि च तिक्तानि; फलानि किञ्चिन्मधुराणि ६. दाडिमफलस्य अन्तः रत्नानीव रक्तानि बीजानि सन्ति ७. द्राक्षाया लता मण्टपे प्रसरति ८. कुरवकस्य पत्राणि मृदित्वा वालिका हस्ततले पादतले च लिम्पन्ति; तेन तानि रक्तवर्णानि भवन्ति

---

21. खर्परः= கொட்டங்கச்சி. नारिकेलबुद्बुदम्= copra, தேங்காய்க் கொப்பரை, बुड्बुडा. 23. खर्जूरः= date fruit, பேரிச்சம்பழம். 24. जम्बूफलम् = rose apple, நாகைப்பழம். 25. कपित्थः=wood apple, விளாம்பழம்.

2, उदुम्बरः = a fig tree. 3. बदरी = jujube, இலந்தை 4. वेतसः = the ratan, பிரம்பு. 5, निम्बः =the margosa tree, வேப்பமரம். तिक्तम् =bitter, கசப்பு. 6. दाडिमः= pomegranate, மாதுளை, दालिंब. बीजम् =seed.



९. धुत्तूरस्य बीजं विषम् १०. बब्बूलवृक्ष आमूलाग्रं कण्टकैर्व्याप्तः ११. बहुबीजः मधुफला अनानस इत्येतेषां फलानि मधुराणि १२. एरण्डबीजेभ्यस्तैलमुत्पद्यते, तत् वातघ्नं विरेचकं च १३. दमनकः दूर्वा बिल्वं तुलसी च देवस्य पूजार्हाणि पत्राणि १४. वातामः पौष्टिकः; गोडुम्बाबीजं च तथाविधम् ॥

---

# अथ मृगादिवर्गः ॥ १८ ॥

### पाठः ३६.

१. सर्वेषां मृगाणां शरीरेभ्यो गजस्य शरीरं स्थूलतममस्ति २. तथापि स अल्पकायात्सिंहाद्बिभेति ३. अस्य चत्वारः पादा एको हस्तश्च वर्तन्ते ४. तस्य करोऽस्मदीयः कर इव

---

9. धुत्तूरः = a thorn apple, ஊமத்தை. 10. बब्बूलः = acacia, கருவைமரம், बाभळी. कण्टकः = thorn, முள். 11. बहुबीजः = gova, கொய்யாபழம், पेरु. मधुफला= melon, கர்ப்பூசுணி, खर्बूज. अनानसः = pine apple, அன்னாசிப் பழம். 12. एरण्डबीजम् = caster seed, கொட்டைமுத்து. 13. दमनकः = தவனம்–மருக்கொழுந்து, दवणा. 14. वाताम. =almond, வாதாங்கொட்டை, बदाम. गोडुंबा = cashew, முந்திரி, काजू .

3. हस्तः–करः–शूण्डा = trunk of an elephant, தும்பிக்கை, हत्तीचीसोंड.

हस्ती करी इति स कथ्यते
नास्ति ; विलक्षणो वर्तते , इति हेतोः हस्ती करी इति स कथ्यते
नास्ति ; विलक्षणो वर्तते , इति हेतोः
५. तत्करस्य शुण्डा इति नाम ; तथा स अधः पतितामेकां पैका
मप्याददात् ६. स तटाकस्थं जलं स्वशुण्डामध्यस्थे बिले
प्रथमं गृह्णाति ; ततस्तत्पिबति ७. अतः स द्विप इति कथ्यते ८.
स बृहतो वृक्षानाप्यधः पातयेत् ९. हस्तिपोऽङ्कुशेन तं प्रह
रति १०. लोहशृङ्खलाभिरालाने स बध्यते ११. अयं
वृक्षाणां शाखा दर्भं तण्डुलं चात्ति १२. तुरगो वेगेन धावति
१३. तस्य प्रतिपादम् एकैक एव शफः १४. मनुष्यवत्तस्य मुखे
ऊर्ध्वमधश्च दन्ता वर्तन्ते १५. तस्य वाजी हयः घोटक इत्या
दीनि नामानि १६. स पुरत आगतं दन्तैर्दशेत ; पृष्ठतो गतं
लत्तया प्रहरेत् १७. हयस्य पृष्ठे पर्याणं, मुखे खलीनं च
स्थाप्यते १८. रासभोऽश्वजातीयः ; स रजकस्य वस्त्रभारं वहति ॥

---

7. द्विपः = drinking in two methods, i.e., an elephant. 9. हस्तिपः=an elephant keeper. अंकुशः= a hook used to drive an elephant. 10. आलानम् = the post to which an elephant is tied. 11. दर्भः = sacrificial grass. 12. तुरगः=a horse. 13. शफः=a hoof, குளம்பு, खुरें. 16. लत्ता=kicking. लत्तया प्रहराति=kicks, உதைக்கிறான். 17. पर्याणम्= a saddle, ஜீனி. खलीनम्=a bridle கடிவாளம். 18. रासभः= an ass.



## पाठः ३७.

१. सिंहः गोमायुः वृकः व्याघ्रः इत्येवमाद्याः पञ्चनखाः, मांसभुजश्च २. व्याघ्री एकदा अनेकान् शावकान् सूते ; तेषु केचनैव जीवन्ति ; अन्ये म्रियन्ते ३. व्याघ्राणां चर्म चित्रवर्णमस्ति; अत एव तेषां चित्रकाय इति नाम ४. ते वृक्षानारोढुं न शक्नुवन्ति ५. ऋक्षाणां देहो दीर्घै रोमभिर्व्याप्तः ६. पश्यात्रैकः श्वा वर्तते ; स गृहाद्बहिरेव स्थातुं योग्यः ७. स स्वामिनो गृहं चोरेभ्यो रक्षति ८. स अन्नदातरि स्निह्यति ९. रथ्यायां गच्छतोऽपरिचितान्दृष्ट्वा स भषेत् १०. शुनां पुच्छं स्वभावतो वक्रम् ११. मर्कटा वने वसन्ति ; अत एव तेषां वनमृग इति नाम १२. गौः पशुजातौ श्रेष्ठा ; अस्या उपकारो मनुष्याणामधिकः १३. अस्याश्चत्वारः पादाः ; एकैकस्य पादस्य द्वौ खुरौ १४. तस्या गळे सास्ना लम्बते १५. अस्या द्वे चक्षुषी द्वे श्रृङ्गे द्वौ कर्णौ च सन्ति १६. अस्याः पृष्ठतः लाङ्गूलमस्ति १७. पुच्छस्याग्रे केशानां गुच्छो वर्तते १८. अस्या देहे मृदूनि रोमाणि सन्ति १९. इयं शीतान्नितरां बिभेति २०. वत्सो मातुः क्षीरं पिबति ॥

---

1. गोमायुः=jackal. वृकः= a wolf. व्याघ्रः= a tiger. पञ्चनखः= having five nails. 2. व्याघ्री= tigress. शावकः= cub, குட்டி. 3. चर्म = skin. 5. ऋक्षः = a bear, கரடி. 6. श्वा=a dog. 9. भष् = to bark. 10. पुच्छम् = a tail, 14. सास्ना=the dewlap, களகம்பளம். 15. श्रृङ्गम्=horn. 16. लाङ्गूलम्=a tail. 17. गुच्छः =a cluster. 19. शीतम्= cold, குளிர். 20. वत्सः = a calf.

## पाठः ३८.

१. गोपो गोः पश्चात्पादौ रज्ज्वा बध्द्वा तां क्षीरं दोग्धि २. इयं सुखेन दुह्यते ३. धेनुः शुष्काणि तृणान्यत्ति ; तथापि मधुरं पयो ददाति ४. पिण्याकं कार्पासबीजानि चास्याः प्रीत्यावहानि ५. अस्याः सौरभेय्या ऊधो घटवत्स्थूलं वर्तते ६. इयं आढकमितं क्षीरं दोग्धि ७. गोमयं परिशुद्धमिति भारतीया मन्यन्ते ८. गोजातौ यः पुमान्स वृषभः ९. गोरिवास्य सर्वाण्यङ्गानि सन्ति १०. अयं पृष्ठेन गोणीं वहति ११. कर्षका एनं लाङ्गले बध्द्वा कर्षन्ति १२. रथे शकटे चायं युज्यते १३. महिष्याः सास्ना नास्ति १४. सा कुरूपा ; सा घनं क्षीरं घटमितं दोग्धि १५. महिषो भारशकटेषु युज्यते १६. तेषां शृङ्गाणि व्यामपरिमितानि, विकृतानि च १७. तेषां पङ्कलोठने प्रीतिरधिका १८. अजा स्वल्पं क्षीरं ददाति १९. हरिणो निरपराधो मृगः २०. उष्ट्रस्य सर्वमपि शरीरं वक्रम् ॥

---

1. रज्जु = a string. 2. दुह् = to milk. 3. धेनुः = a milk-cow. 4. पिण्याकम् = oil cake. कार्पासबीजम् = cotton seed. 5. सौरभेयी = a cow. ऊधः = an udder, மடி, कांस. 7. गोमयम् = cow dung. 8. वृषभः = a bull. 10. गोणी = gunni. 11. लाङ्गलम् = a plough, கலப்பை. 12. शकटः = a cart, गाडी. 13. महिषी = she-buffalo. 14. कुरूपा = ugly. 15. महिषः = he-buffalo. 18. अजा = a sheep. 19. हरिणः = a deer. 20. उष्ट्रः = a camel.



## पाठः ३९.

१. गरुडः पक्षिणां राजा २. पाठिताः शुका मनुष्या इव वदन्ति ३. कोकिलो वसन्ते वल्गु कूजति ४. काकः श्रोतॄणां कर्णकठोरं रटति ५. हंसस्य गरुतः श्वेताः ६. पक्षिणां द्वौ पक्षौ स्तः ७. शिखी बर्हान् वितत्य नृत्यति ८. भारद्वाजः काकस्य शिरसि कुट्टयति ९. घूकः पिङ्गलो वा यस्मिन्गृहे नीडं बध्नाति तद्गृहं शून्यं भवति १० शकुन्ता नीडेष्वण्डानि निदधति ११. गृध्रा अजशिशुमप्युद्गृह्य डयन्ते १२. श्येनोऽण्डजेषु महान् १३. गृहगोधिका भावि शुभाशुभं जनानां सूचयति १४. कृकलासस्य मुखं सर्पस्येव वर्तते १५. प्रतिसूर्यकः सूर्यं दृष्ट्वा शिरश्चलयति १६. सर्पाणां पादा न सन्ति ; ते उरसैव गच्छन्ति १७. तेषां दंष्ट्रासु विषं वर्तते ; तैर्दंष्ट्राः प्राणि-

---

3. कोकिलः = a cuckoo. 4. रट् = to cry. 7. शिखी = a peacock. 8. भारद्वाजः = a lark. 9. घूकः = a big owl, கோட்டான். पिङ्गलः = a small owl, ஆந்தை, पिङ्गळापक्षी. 10. अण्डम् = an egg. 11. गृध्रः = a vulture. 12. श्येनः = a hawk. अण्डजः = a bird. 13. गृहगोधिका–पल्ली = lizard. 14. कृकलासः = a chameleon, அரணை, सरड. 15. प्रतिसूर्यकः ஓணான். 16. उरः = the breast.

नो म्रियन्ते १८. केषांचिदुरगाणां **फणा** वर्तते १९. **डुण्डुभाणां** विषं नास्ति २०. **वृश्चिकानां** पुच्छे विषम् २१. **शतपद्या** मुखे एकः कण्टको वर्तते; तेन सा जनान् विध्यति २२. **व्यालग्राही** अहीन् निगृह्णाति ॥

---

### पाठः ४०.

१. **कुक्कुटा** अवकरे पतितांस्तण्डुलकणानुञ्छन्ति २. **अलयः** पुष्पे स्थितं मधु पिबन्ति ३. **खद्योता** रात्रौ नक्षत्राणीव प्रकाशन्ते ४. **कपोतो** धान्यान्युञ्छति ५. वर्षासु **कीटा** उत्पद्यन्ते ६. **मक्षिका** दिवा बाधन्ते ७. **मशका मत्कुणाश्च** रात्रौ बाधन्ते ८. **चिक्रोडः** फलान्यत्ति; तस्य **वृक्षमर्कट** इति नामान्तरम् ९. **नकुलः** सर्पाणां सहजः शत्रुः १०. **वम्रयः** पुस्तकानि खादन्ति

---

18. फणा = a hood. 29. डुण्डुभः = a water snake. 20. वृश्चिकः = a scorpion. 21. शतपदी = a centipede, பூரான், गोम. 22, व्यालग्राही = a snake catcher.

1. कुक्कुटः = a cock. 3. खद्योतः = a firefly. 4. कपोतः = a pigeon. 5. कीटः = a worm. 6. मक्षिका = a fly. 7. मशकः = a masquito. मत्कुणः = a bug. 8. चिक्रोडः = squirrel, அணிப்பிள்ளை.. 9. नकुलः = a mongoose. सहजः = natural. 10. वम्रिः = a white ant.



११. **पिपीलिका** मनुष्यान्दष्ट्वा स्वयं म्रियन्ते १२. **यूकाः** शिखायां स्वेदादुद्भवन्ति १३. **शलभाः** सस्यं खण्डयन्ति १४. ते फलभ्रान्त्या दीपे पतित्वा म्रियन्ते १५. **गोधायाश्चर्म** डमरुकायोपयुज्यते १६. **लूता** मुखोच्छिष्टेन तन्तून् सृजति १७. **अञ्जलिका** पक्षवत्त्वान्मृगैर्बहिष्कृता; चतुष्पात्त्वात्पक्षिभिश्च बहिष्कृता १८. **वृक्षश्वानो** नारिकेलवृक्षमारुह्य नारिकेलफलान्यदन्ति १९. **झिल्लिकाया** रूपं सूक्ष्मम्; शब्दस्तु महान् ॥

---

## अथ देशवर्गः ॥ १९ ॥

—(*)—

### पाठः ४१.

१. कतिपयगृहो **ग्रामः** २. बहुगृहं, धनिकानां वणिजां चाऽऽवासभूतं **नगरम्** ३. राज्ञो निवासभूतं पत्तनं **राजधानी** ४. सा **वप्रेण परिखया** च वेष्टिता भवेत् ५. बहुभिर्नगरैर्ग्रामैश्च युतो

---

11. पिपीलिका = an ant. 12. यूका = a louse, பேன். 13. शलभः = a locust. 15. गोधा = an iguana, உடும்பு डमरुकः = a small drum, डबू. 16. लूता = a spider. 17. अञ्जलिका = a bat, வௌவால், पांकोली. 18. वृक्षश्वा = மரநாய். 19. झिल्लिका = a cricket, சுவற்றுக்கோழி.

3. राजधानी = a capital city. 4. वप्रः = a rampart. 5. देशः = a country.

देशः ६. देशानां सीमा नदीभिः पर्वतैश्च विभज्यते ७. केरलाः चोलाः कर्नाटका आन्ध्रा महाराष्ट्रा गुर्जरा वङ्गा इत्यादयः षट्पञ्चाशत् देशाः ८. किंनामधेयमिदं पत्तनम्? एतत्पत्तनं कुम्भघोणाख्यम् ९. अस्मिन् पञ्चाशत्सहस्राणि गृहाणि सन्ति १०. अत्र बहवो देवालया वर्तन्ते ११. तेषु विष्ण्वालया दश, शिवालया द्वादश १२. तेषु शार्ङ्गपाणि, चक्रपाणि, रामस्वामिनां, कुम्भेश्वर, सोमेश्वर, नागेश्वराणां च आलया महान्तः १३. कुम्भेश्वरालयस्य गोपुरं अत्युन्नतम्; ततोऽप्युन्नततमं शार्ङ्गपाणेः १४. देवालयानां चतसृष्वपि दिक्षु रथगमनयोग्या रथ्या वर्तन्ते १५. तासु प्रायो ब्राह्मणा वसन्ति १६. अस्मिन्पत्तने कावेरी नाम महानदी प्रवहति; दक्षिणतश्च हरिनदी १७. कावेरीतीरे प्रायो ब्राह्मणानामग्रहाराः १८. तेषु कृष्णराय-अग्रहारः, वेङ्कटराय-अग्रहारः, रङ्गराय-अग्रहारः, लक्ष्मीनरसप्प-अग्रहारः, व्यासराय-अग्रहारः, एवमादयोऽग्रहाराः पुरातनैर्माध्वप्रभुभिर्निर्माय ब्राह्मणेभ्यो दत्ताः १९. वैश्यानां वीथयः, गोपानां घोषाः शूद्राणां प्रतोल्यश्च बहवो वर्तन्ते २०. संन्यासिनां निवासाय अनेके मठा, ब्राह्मणानां भोजनाय अनेकानि अन्नसत्राणि च विद्यन्ते ॥

---

6. सीमा=boundary. 10. देवालयः=temple. 13. गोपुरम्= a town-gate. 14. रथ्या=a street. 16. हरिनदी= அரசலாறு. 19. वीथिः= a street. घोषः= a station of herdsmen. 20. मठः= a mutt. अन्नसत्रम् = a choultry, where brahmanas are fed gratis.



## पाठः ४२.

१. गृहाणां भित्तयः इष्टकाभिर्मृदा च बध्यन्ते २. कानिचन कुड्यानि उपलैः सुधया च बध्यन्ते ३. वेश्मनो बहिर्भागे अभ्यागतानामुपवेशाय अलिन्दः क्रियते ४. प्रथमकक्ष्यायां सभाशाला निर्मीयते ५. पाकशाला भोजनशाला च पृथक् कर्तव्या ६. भोक्तारो महानसं न प्रविशेयुः ७. रसवत्यां धूमनाली आवश्यिका ८. स्नानागारे कूपेन वा प्रणाल्या वा भाव्यम् ९. गेहे वातसञ्चारार्थं बहवो गवाक्षाः कर्तव्याः १०. शयनशालायां वातायनानि अत्यावश्यकानि ११. धूलीपातपरिहारार्थं वितानानि बध्यन्ते १२. तस्य वेश्मनि देवगृहं नितरां रमणीयमस्ति १३. गृहस्य मध्ये प्राङ्गणं, परितः

---

1. भित्तिः–कुड्यम्=a wall. इष्टका= a brick. 2, सुधा= chunnam. 3. अभ्यागतः= a guest. अलिन्दः= a pial, திண்ணை. 4. कक्ष्या =a part of a house. सभा = a hall, கூடம். 5-6-7. पाकशाला–महानसः–रसवती = a kitchen. 7. धूमनाली = a chimney. 8. स्नानागारम् = bathing room. कूपः = a well. प्रणाली= water pipe. 9–10. गवाक्षः–वातायनम्= window. 10. शयनशाला= a bed chamber. 11. धूली= dust. वितानम्= canopy, மேல்கட்டு. 12. देवगृहम् = an apartment for the worship of God, சுவாமி உள். 13. प्राङ्गणम् = court-yard, முற்றம்.

स्तम्भाः, तदुपरि तिरश्चीनस्थूणाश्च क्रियन्ते १४. तदुपरि वेणून् आस्तीर्य लोष्टैश्छदिः क्रियते १५. उटजानां छदिर्नारिकेलपर्णैस्तालपर्णैस्तृणैर्वा पिधीयते १६. गृहाद्बहिः कायमानः कृतः १७. कवाटेन गृहद्वारं पिदधाति जनाः १८. कवाटम् अन्तः अर्गलेन अर्गलयन्ति १९. बहिस्तु मुद्रया मुद्रयन्ति २०. मुद्रा कुञ्चिकया उद्घाटयितव्या ॥

---

### पाठः ४३.

१. कस्येदं महद्वेश्म? २. इदं कस्यचित् श्रेष्ठिनः ३. अस्य गृहस्य छदिषः स्थाने सुधामयी चन्द्रशाला निर्मिता ४. हर्म्यम् आरोढुमियं सोपानपङ्क्तिः ५. कुत्र त्वं वससि? उत्तरतृतीयवीथ्यां सप्तत्रिंशत्संख्याके गृहे वसामि ६. किं तत्तव स्वीयम्?

स्तम्भः = a post, தூண். तिरश्चीनस्थूणा = a beam, உத்திரம். 14. वेणुः = a bamboo, மூங்கில். लोष्टम = a tile, ஓடு, कौल, छदिः-सकारान्तः नपुंसकलिङ्गः = a roof, கூரை, छावणी. 15. उटजः = a hut. तालपर्णम् = palmyra leaf, பனையோலை. 16. कायमानः = pandal, பந்தல், छप्पर 17. कवाटम् = a door. गृहद्वारम् = house gate. 18. अर्गलम् = a wooden bolt. 19. मुद्रा = a lock. 20. कुञ्चिका-तालकम् = a key.

3. सुधामयी = built of chunnam. चन्द्रशाला-हर्म्यम् = a mansion, மேல்மெத்தை, उपरमाडी. 4. सोपानम् = a stair, மாடிப்படி, पायरी. 6. स्वीयम् = own.



नहि; भाटकेन स्वीकृतं तत् ७. तस्य मासिकं भाटकं त्रीणि रूप्याणि ८. किं तत्प्रासाद उत लोष्टगृहम्? ९. तत् लौष्टिकमेव १०. भवतु, ममाप्येकमणु गृहं भाटकार्हं पश्य ११. कुटीरं चेदप्यलं मम १२. महतो वेश्मनो भाटकं दातुं मम योग्यता नास्ति १३. वयं चत्वार एव जना वर्तामहे १४. तर्हि मम प्रातिवेशिकगृहं रिक्तमस्ति तत्तव दर्शयामि १५. इदमण्वपि विविक्तं वर्तते; एतावदलं मम वस्तुम् १६. अये किङ्कर! श्वः प्रातरिदं गृहं सम्मार्जय १७. शौचस्थानं कुत्र वर्तते? १८. निष्कुटे वर्तते; सम्मार्जकस्य मार्गान्तरमस्ति १९. गृहस्य भित्तौ सन्धिं कृत्वा चोरः प्रविशेत्किम्? २०. सुरक्षितेयं खलु वीथी; अतश्चोरो न प्रवेष्टुं शक्नुयात् ॥

---

भाटकम् = rent, வாடகை, भाडें. 8. लोष्टगृहम्-लौष्टिकम् = tiled house. 11. कुटीरम् = a hut. 14. रिक्तम् = empty. 15. विविक्तम् = separate. 17. शौचस्थानम् = latrine, கக்கூசு, पायखाना. 18. निष्कुटः = a backyard, புறக்கடை, पुरसू. सम्मार्जकः = sweeper. 19. सन्धिः = a house-breaking, கன்னம்.

## पाठः ४४.

१. अग्रहारवासिनां ब्राह्मणानां **क्षेत्राणि** सन्ति किम्? २. आम्; सन्ति एकैकस्य गृहस्थस्य **आर्द्रक्षेत्रेषु** चतस्र **एकराः**, **शुष्कक्षेत्रेषु** तिस्र एकराश्च ३. आर्द्रक्षेत्रं खण्डशो विभक्तं वर्तते ४. तस्य खण्डस्य **केदार** इति नाम ५. तेषु प्रथमं **षष्टिकानां** कृषिः, ततः **शालीनां**, इति एकस्मिन्वत्सरे **द्विवारं** **कृषिः** क्रियते ६. शुष्कक्षेत्राणां **राजकीयः** सांवत्सरिकः **करः** एकराया एका रूपिका ७. आर्द्रक्षेत्राणां तु रूपिकाद्वयम् ८. आर्द्रक्षेत्रेषु व्रीहयो गोधूमा इत्यादीनि धान्यान्युद्भवन्ति ९. शुष्कक्षेत्रेषु कुलित्था माषा **भूचणका** इत्यादीनि भवन्ति १०. **ग्रामगणको** वार्षिकं करं क्षेत्रस्वामिनः सकाशात् चतुर्षु मासेषु विभज्य संगृह्णाति

---

1. क्षेत्रम् = land. 2. गृहस्थः=a house holder. आर्द्र. क्षेत्रम्=wet-land, நஞ்சை. शुष्कक्षेत्रम् =dry-land, புஞ்சை. एकरा=acre, ஏகரா. 4. केदारः=a field, வயல். 5. षष्टिकः= a kind of paddy which grows in sixty days, குறுவை நெல், साठांदिवसांनीं पिकणारेंभात. शालिः= செம்பாநெல், साळी. द्विवारम्=twice. कृषिः = cultivation. 6. राजकीयः=royal. सांवत्सरिकः=yearly. करः=tax. 9. भूचणकः=ground-nut, நிலக்கடலை, भोयचणे. 10. ग्रामगणकः=village karnam, கிராமக்கணக்கன் (கர்ணம்).



११. **देवमातृकाणि** क्षेत्राणि **घटीयन्त्रेण** प्लाव्यन्ते १२. **वप्रौ** व्रीहिबीजानि उप्यन्ते १३. यदा तेषाम् **अङ्कुरा** दशाङ्गुला भवन्ति तदा तानुत्खायान्यत्र निखानयन्ति कृषीवलाः १४. यदा **कणिशाः** पक्वा भवन्ति तदा तान् **लवित्रेण** सकाण्डं लुनन्ति १५. ततो व्रीहीन्संगृह्य **पलालं** पशुभ्यः पुञ्जीकुर्वन्ति १६. **काष्ठं परशुना** छिन्दन्ति १७. **क्रकचेन** वृक्षः पाट्यते १८. **ऊषरे मरौ** च उप्तं बीजं न प्ररोहति १९. कावेर्यां **सिकता** वर्तन्ते २०. मृत्तिका चिक्कणाऽस्ति ॥

---

11. देवमातृकः = a land watered by rain only, வானவாரி நிலம். घटीयन्त्रम् = a machine for raising water from a well, ஏற்றம், राहाट. 12. वप्रिः=a field for seedling, நாற்றங்கால். 13. अङ्कुरः=a shoot, முளை. 14. कणिशः= an ear of corn. लवित्रम्= a sickle. 15. पलालम्=straw. 16. काष्ठम्=wood, கட்டை. परशुः = an axe, கோடரி. 17. क्रकचः = a saw, வாள். 18. ऊषरः = a saline land. मरुः=a desert, 19. सिकता = sand, மணல். 20. मृत्तिका= clay, களிமண். चिक्कणः=smooth, வழுவழுப்பான.

# अथ उपकरणवर्गः ॥ २० ॥

## पाठः ४५.

१. कटेषु दरिद्राः स्वपन्ति २. धनिकाः **मञ्चेषु हंसतूलिकां** तदुपरि **प्रच्छदं** चास्तीर्य शेरते ३. स्वप्नारः स्वेषां **दंशरक्षां** च बध्नन्ति ४. **प्रेङ्खे** उपविष्टं श्रीकृष्णं सत्यभामा आन्दोलयति ५. **दोलायां** बालः शेते ६. **फलके** उपविश्य भोक्तारो भुञ्जते ७. पूजका देवं **पीठे** उपवेश्य षोडशभिरुपचारैः पूजयन्ति ८. स **आसन्द्याम्** उपविष्टोऽस्ति ९. कर्मकरी **उलूखले** व्रीहीन्प्रक्षिप्य **मुसलेन** अवहन्ति १०. तेनावहननेन व्रीहिभ्यस्तण्डुलाः **तुषाश्च** पृथक्पृथग्भवन्ति ११. सा तान्पुनः **शूर्पेण बहुलीकृत्य** तुषानपनयति १२. सा पुनस्तांस्तण्डुलान् **चालिन्या** सञ्चाल्य तण्डुलैः सह मिश्रान्व्रीहीन्बहिरुद्धरति १३. एवं शुद्धांस्तण्डुलान् गृहस्वामिनी **पिटकेषु कुसूलेषु** वा निक्षिपति १४. अस्यां **गोण्यां** त्रिंशदाढका माषा वर्तन्ते १५. पाचकाः प्रथमं **चुल्ल्याः** पूजां कुर्वन्ति १६. प्रक्षालितानां तण्डुलानां कस्यचिद्भागस्य अग्नौ प्रक्षेपणमेव **चुल्लीपूजा** १७. पक्त्वा चुल्यामग्निं प्रज्वाल्य तदुपरि सजलं **पात्रं** निक्षिपति १८. स त्रिः प्रक्षालितांस्तण्डुलान् **क्वथ्यमाने** जले प्रक्षिपति १९. तत्पात्रं **शरावेण** पिहितं चेत् तण्डुलाः शीघ्रं पच्यन्ते २०. प्रायः **पिठरेऽन्नं** पचन्ति ॥

---

1. कटः=a mat, பாய். 2. मञ्चः= a cot, கட்டில். हंसतूलिका= cushion, மெத்தை. प्रच्छदः=bed-sheet. 3. दंशरक्षा=musquito net, கொசுவலை. 4. प्रेङ्खः= swinging cot, ஊஞ்சல், झोपाळा. 5. दोला= a cradle of a child, தொட்டில், पाळणा. 6. फलकः= a plank. 7. पीठः= a stool, நாற்கால் பலகை, चारेपायांचे पाट. 8. आसन्दी–चतुष्पदासनम्= a chair, நாற்காலி, खुर्ची. 9. उलूखलम्= a mortar, உரல், उखळें. मुसलः= a pestle, உலக்கை, मुसळें. 10. तुषः= husk, உமி, धान्याचे तूस. 11. शूर्पः= a winnow, முறம், सूप. बहुलीकरणम्= winnowing, புடைக்கிறது, पाखडणें.



## पाठः ४६.

१. अन्नपात्रस्य मुखे शरावं संयोज्य **काञ्जिकां** निःसारयेत् २. स्थालीस्थमेकं **सिक्थं** पक्वं चेत्सर्वमप्यन्नं पक्वमिति जानीयात् ३. क्वथितं पिष्टं **यवागूर्भवति** ४. सा अन्नादपि अधिकं पुष्टिकरी; किन्तु **दुर्जरा** ५. इदानीं व्रीहीणां **अवहननाय** सर्वत्र

---

12. चालिनी=a sieve. சல்லடை, चाळण. 13. पिटकः= basket, கூடை. कुसूलः= a granary, குதிர். 14. गोणी= gunny, சாக்கு. 15. चुल्ली= an oven, அடுப்பு, चूल. 18. क्वथ्यमानम्= boiling, கொதிக்கிற. 19. शरावः= a platter, தாம்பாளம், परात. 20. पिठरः= a pot, தவலை, तपेली.

1. काञ्जिका= boiled rice water (ganji), கஞ்சி, पेज. 2. सिक्थम्= a single boiled rice, பருக்கை. 3. यवागूः= கஞ்சி. 4. दुर्जरा= indigestible. 5. अवहननम्= hulling,

यन्त्राण्युद्धूतानि ६. तानि स्वयमेवावघ्नन्ति वितुषीकुर्वन्ति चालयन्ति च ७. कोऽयं महोत्सवोऽद्यास्मद्गृहे? ८. किमियं दासी जलं हरति? ९. किङ्कारणमियं पटीरपाषाणे गन्धान् पिनष्टि? १०. किमियं विचित्राः पुष्पस्रज उद्ग्रथते? ११. किमियं कलेन हुङ्कृतेन उलूखले किमपि कण्डयति? १२. किमपरा घरट्टेन गोधूमांश्चूर्णयति? १३. किमेते सूदाः कान्दविकाश्च ओदनं भक्ष्याणि च पचन्ति? १४. किमेते ब्राह्मणाः कण्ठे रुद्राक्षमालिकां धृत्वा भस्मोद्धूलितशरीराः पवित्रपाणयश्च भूत्वा मन्त्राञ्जपन्ति? १५. किमन्ये अग्रजन्मान अग्नौ आज्यं समिधश्च जुह्वति? १६. किं कारणमेतेषां भवेत्? १७. भवतु; गृहिणीमेव पृच्छामि १८. प्रिये! कोयमद्यास्मद्भवने कोलाहलः?

குத்துகிறது, कांडणें. 7. महोत्सवः= a great festival. 9. पटीरपाषाणम्= சந்தனக்கல். 10. उद्ग्रथते= string together. 11. कलम्= soft tone. हुंकृतम्= humming sound, ஹூம் என்கிற சத்தம். 12. घरट्टः= grinding mill, எந்திரம். 13. कान्दविकः= a baker, பணிகாரஞ்செய்கிறவன். 15. अग्रजन्मा= Brahmana. समित्= a sacred fuel. 17. गृहिणी= wife. 18 कोलाहलः= an uproar, கந்தடி, कलकलाट.



१९. आर्यपुत्र! त्वदीयनक्षत्रोपेतायामद्य रात्रौ राहुश्चन्द्रं ग्रसते इत्यशृणवम्; तद्दोषशान्त्यर्थम् आयुष्यहोमः क्रियते २०. तदर्थं भोजनाय ब्राह्मणा आमन्त्रिताः २१. अये मुग्धे! केनापि उदरम्भरिणा ब्राह्मणेन विप्रलब्धाऽसि २२. नाद्य मदीयं नक्षत्रम्; न चोपरागोऽस्मिन्भरतखण्डे २३. चलतु; येन केनापि निमित्तेन भुञ्जतां द्विजाः; प्रीयतां परमेश्वरः ॥

―――*―――

## पाठः ४७.

१. सैरन्ध्री स्वामिन्याः केशान् कङ्कतिकया प्रसाध्य वेणीं रचयति २. सा मुखं संक्षाल्य दर्पणे दृष्ट्वा फाले कुङ्कुमेन तिलकं करोति ३. दासी राज्ञीं व्यजनेन वीजयति ४. सेवकाः सम्मार्जन्या अवकरं अपनयन्ति ५. उद्यानरक्षकः छुरिकया कदली-

19. आयुष्यहोमः= an offering preservative of life. 21. मुग्धा= beautiful or fool. उदरम्भरिः= gluttonous, வயிறு வளர்க்கிறவன், पोटभरणारा. विप्रलब्धः= deceived.

1. सैरन्ध्री= a female artist. कङ्कतिका= a comb. 2. दर्पणम्= a mirror. तिलकम्= a mark, பொட்டு, तिला. 3. व्यजनम्= a fan. 4. संमार्जनी= a broom. अवकरः= sweepings, குப்பை, केर. 5. छुरिका= a knife.

पत्राणि कृन्तति ६. तक्षणफलकेन नारिकेलं तक्ष्णोति ७. छुरिकापीठेन कूष्माण्डं खण्डयति पाचकः ८. अङ्गारेषु पर्पटान् भृज्जति ९. अम्बरीषे चणका भृज्ज्यन्ते १०. ऋजीषे तैलं निक्षिप्य माषवटकान्पचति सूदः ११. शीतार्ता अङ्गारधानिकायाम् अग्निं प्रज्वाल्य देहं तापयन्ति १२. उल्मुकात् धूम उद्गच्छति १३. जलेन निर्वापिता अङ्गारा इङ्गाला भवन्ति १४. अलिञ्जरं जलेन पूरय १५. कुत्वां तैलं वर्तते १६. भोजनानन्तरं कलशस्थेन वारिणा हस्तं क्षालयति भोक्ता १७. मृद्घटोऽनायासेन भिद्यते १८. पात्रस्थमन्नं दर्व्या बहिरुद्धरति १९. उद्धरिण्या आचामति २०. पञ्चपात्रेण जलं पिबति ॥

---

6. तक्षण फलकः= scraping plank, சுருவுபலகை, किसणी. 7. छुरिकापीठः= sickle plank, அரிவாள்மணை, विळी. 8. अङ्गारः= burning charcoal, தணல், निखार. 9. अम्बरीषः= frying pan, வாணாய், तेलतवा. 11. अङ्गारधानिका= a portable fire pan, கணப்பு, शेगडी. 12. उल्मुकः= a brand, கொள்ளிக்கட்டை, कोलीत. 13. इङ्गालः= charcoal, மரக்கரி, कोळसा 14. अलिञ्जरः= a brass tub, கங்காளம், गङ्गाळ. 15. कुतूः= a leathern oil bottle. 16. कलशः= a water pot, சொம்பு, तांब्या. 18. दर्वी= a spoon, கரண்டி, पळी. 19. उद्धरणिः= a small spoon. 20. पञ्चपात्रम्= a tumbler.



## पाठः ४८.

१. काचपात्राणि मृद्विशेषेण क्रियन्ते २. काचकुप्यां रसायनं निधाय तस्या मुखं भिण्डेन पिधेहि ३. अस्मिन् समुद्गके देवस्य पूजार्थं तुलसी पुष्पाणि च निक्षिप्तानि सन्ति ४. ताम्बूलकरङ्के क्रमुकं ताम्बूलपत्राणि च न सन्ति ५. आपणात् खादिरसारम् आनय ६. चूर्णसम्पुटोऽपि रिक्तोऽस्ति; चूर्णेन तं पूरय ७. कुतः शयनगृहे पतद्ग्रहो नास्ति? ८. दीपे वर्तयो न सन्ति ९. आभरणानि मञ्जूषायां निधेहि १०. शय्यायां द्वे उपधाने स्तः ११. उद्यानपालः सेचन्या वृक्षान् सिञ्चति १२. सुवर्णस्य वर्णाः निकषाश्मनि घर्षणेन ज्ञायन्ते १३. शाणे मार्जनेन शस्त्रं तीक्ष्णं

---

2. रसायनम् = a medicine preventing old age. भिण्डः=cork, பெட்டி. 3. समुद्गकः = a casket, குடலை. 4. ताम्बूलकरङ्कः=a betel box, வெற்றிலைப்பெட்டி, पानदान. 5. खादिरसारः = a catechu, காசிக்கட்டி. 6. चूर्णसम्पुटः = chunam casket, சுண்ணாம்புகரண்டகம். 7. पतद्ग्रहः = a spitting pot, பீக்தாணி. 8. वर्तिः = the wick of a lamp, விளக்குத்திரி. 9. मञ्जूषा=a box, பெட்டி. 10. उपधानम् = a pillow, தலைகாணி. 11. सेचनी = a bucket, நீர்ச்சால். 12. निकषाश्म=touch stone, உரைக்கல், कसोटी. 13. शाणः=sharpening stone or whetstone, சாணைக்கல்,

भवति १४. घरट्टे घर्षणेन धान्यं पिष्टं भवति १५. दृषदि उपलेन नारिकेलस्य तष्टं सा पिनष्टि १६. स्वर्णकारः सुवर्णं विलापयितुम् अग्निकुण्डं भस्त्रिकया धमति १७. शङ्कुलया क्रमुकान् खण्डयति १८. खनित्रेण मृत्तिकां खनति ॥

---

## अथ वाहनवर्गः ॥२१॥

### पाठः ४९.

१. ग्रामान्तरं गन्तुं नानाविधानि वाहनानि क्लृप्तानि २. धनिका रथे उपविश्य यान्ति ३. केचन शकटं आरुह्य गच्छन्ति ४. शकटस्य द्वे चक्रे स्तः ५. रथस्य चक्राणि चत्वारि ६. द्वौ वा चत्वारो वा बलीवर्दा रथस्य धुरि नियुज्यन्ते ७. केचन अश्वानपि नियुञ्जते ८. अणु शकटं एक उक्षा वहति

---

निष्णादगड. तीक्ष्णम् = keen. 15. दृषद् = a flat stone on which spices etc. are ground, அம்மிக்கல், पाटा. उपलः = a muller, அம்மிக்குழவி, वरवंटा. तष्टम् = paring, துருவல், कीस. 16. अग्निकुण्डम् = கம்மாளனுலை. भस्त्रिका = bellows, துருத்தி, भाता. 17. शङ्कुला = nut-cracker, பாக்குவெட்டி, अडकित्ता. 18. खनित्रम् = a spade, மண்வெட்டி, कुदल.

1. वाहनम् = a vehicle. 2, रथः = a car. 3. शकटः = a cart. 4. चक्रम् = a wheel. 6–8. बलीवर्दः–उक्षा = a bull. धूः = fore-part of a carriage or yoke, நுகத்தடி,



९. शिबिकां षोडश वाहका वहन्ति १०. गमनागमनाय लोहपथाः पूर्वं द्वीपान्तर एवासन् ११. इदानीं भरतखण्डेऽपि ते उत्पन्नाः १२. तेन पथा अनेकैः शकटैर्ग्रथिता एका शकटश्रेणी गच्छति १३. तामेको बाष्पशकट आकर्षति १४. गोरथमपेक्ष्य अश्वरथः शीघ्रतरं गच्छति १५. तदपेक्षयापि अग्निरथः चतुर्गुणेन जवेन गच्छति १६. एकैकः शकटोऽप्यनेकैर्भागैर्विभक्तोऽस्ति १७. एकैकस्मिन्नपि भागे द्वे आसने क्लृप्ते स्तः १८ एकैकस्मिन्नप्यासने चत्वारः पञ्च वा पथिका उपविशेयुः १९. जी. ऐ. पी. प्रभृतयो लोहपथा आयतमानाः २०. तेषामासनेषु पञ्च पान्था उपविशेयुः २१. एस्. ऐ. आर. प्रभृतीनां संकुचितमानानाम् आसनेषु तु चत्वार एव ॥

---

### पाठः ५०.

१. शकटश्रेणी एकस्यां घण्टायां विंशतेरन्यूनान्क्रोशान्गच्छेत् २. जी. ऐ. पी. प्रभृतिष्वौत्तराहलोहपथेषु शकटश्रेणी घण्टाया-

---

9. शिबिका = a palanquin. 10. लोहपथः = railway. 12. शकटश्रेणी = a train. 13. बाष्पशकटः–अग्निरथः = an engine. 16. भागः = a compartment. 17. आसनम् = a seat. 18. पथिकः–पान्थः–यात्रिकः = a passenger. 19. आयतमानः = broad gauge. 21. संकुचितमानः = metre gauge.

श्चत्वारिंशत्क्रोशानपि गच्छेत् ३. सर्वत्र **भाण्डशकटश्रेणी** किञ्चिन्मन्दमेव गच्छेत् ४. पञ्चक्रोशानां दशक्रोशानां वा एकैकं **अवरोहणस्थानं** वर्तते ५. एकैकस्मिन्नपि **स्थाने**, **स्थानाधिकारी**, **चीटीदाता**, **चीटीसंग्राहकः**, **पोटलिकाधिकारी**, **भाण्डाधिकारी** इत्येवमादयोऽधिकारिणो वर्तन्ते ६. एतस्मात्स्थानादमुकस्यस्थानस्य एतावत् **वेतनमिति** क्लृप्तिर्वर्तते ७. तदनुसारेण **पान्थेभ्यो** द्रव्यं संगृह्य **चीटीदाता** चीटीं ददाति ८. इयत् वेतनमनेन दत्तमित्यस्य **चीटी** ज्ञापिका भवति ९. शकटश्रेण्यामुपविश्य पान्थेषु गच्छत्सु मध्ये मध्ये **चीटीशोधक** आगत्य यदि पृच्छेत्तर्हि तस्मै पान्थैश्चीटी प्रदर्शयितव्या १०. एकैकस्याः शकटश्रेण्या द्वौ **रक्षकौ** वर्तेते ११. **बाष्परथे** समर्थो **यन्ता** भवेत् १२. अद्य प्रातः **मद्रपुरात्** प्रस्थिता **मैलशकटश्रेणी** परेद्युः प्रातर्नवमघण्टावादनसमये षष्ट्युत्तरचतुःशतक्रोशदूरे विद्यमानं रामेश्वरं प्राप्नुयात् १३ कुम्भघोणात् रामेश्वरस्य **शकटवेतनम्** अष्टमांशन्यूना-

3. भाण्डशकटश्रेणी = goods train. 4. अवरोहणस्थानम् = railway station. 5. स्थानम् = station. स्थानाधिकारी = station master. चीटीदाता = booking clerk. चीटीसंग्राहकः = tickect collector. पोटलिकाधिकारी = parcel clerk. भाण्डाधिकारी = goods clerk. 6. वेतनम् = charge. 7. चीटी = ticket. 9. चीटीशोधकः = ticket examiner. 10. रक्षकः = a guard. 11. बाष्परथः = engine. यन्ता = driver. 12. मद्रपुरम् = Madras. मैलशकटश्रेणी = Mail train. 13. शकटवेतनम् = trainage.



श्चतस्रो रूपिका नव पैकाश्च १४. एतदेव **पासञ्जरशकटश्रेण्याः** सपादं रूपिकात्रयम् १५. एतत् **तृतीयकक्ष्यायाः**; प्रथमद्वितीयकक्ष्ययोस्त्वधिकम् १६. तव **यात्रासामग्री** अमिता वर्तते; तस्याः पृथग्वेतनं देयं भवेत् १७. वेतनं कियद्देयम्? तां घटे निक्षिप; तोलयित्वा कथयामि १८. तस्या भारोऽशीतिः सेरा वर्तन्ते; **पान्थेन** पञ्चदश सेरा वेतनं विना नेतुं शक्यम् १९ अधिकानां पञ्चषष्टिसेराणां सप्तरूपिकाः पृथक् देयाः २०. मध्ये रामनाथपुराख्ये **अवरोहणस्थाने** अवतीर्य **ग्राम्यशकटमारुह्य** दर्भशयनं गच्छ ॥

---

## पाठः ५१.

१. सर्वं **समीचीनं** जातम्; मन्निकटे पञ्चैव खलु रूपिका उर्वरिताः २. ताभिः कथं **यात्रां** करवाणि? ३. अतो मह्यं पञ्चाशतं रूपिकाः प्रेषयितुं **बेङ्गलूरस्थाय** मम भ्रात्रे पत्रं लिखामि ४. भोः कण्टीरवाचार्य! कुतस्त्वं पत्रं लिखसि? ५. पत्रं दृष्ट्वा द्रव्यं **मणिआर्डरद्वारा** प्रेषितं चेत् पञ्चमे दिने त्वं तत्प्राप्नुयाः ६. तथा मा कुरु; **विद्युद्वार्तां** प्रेषय ७. बेङ्गलूरात् **विद्युद्वार्तयैव** मणिआर्डरपि प्रेषितं चेत् अद्य सायमेव तव द्रव्यमागच्छेत् ८. कुम्भघोणे पाट्टाचार्यवीथ्याम् आगतात् कण्ठीरवाचार्यात्, बेङ्गळूरे

15. तृतीयकक्ष्या = third class. 16. यात्रासामग्री = luggage. 18. पान्थः = a passenger. 20. ग्राम्यशकटः = country cart. 2. यात्रा = pilgrimage. 6. विद्युद्वार्ता = telegraph.

बलीवीथ्यां गरुडाचार्याय; मह्यं पञ्चाशतं रूपिका विद्युन्मणि-आर्डद्वारा प्रेषय, इति लेख्यम् ९. तस्य कियान् व्ययो भवेत्? १०. एतानि चतुर्दश पदानि भवन्ति; तेषां चतुर्दश आणकाः ११. तत्कथम्? १२. तारावार्तायां एकं पदमारभ्य द्वादश-पदपर्यन्तं द्वादश आणका वेतनम् १३. तदुपरितनानां पदानां एकैकस्य एकैका अणा १४. "भवतु तथैव करोमि" इत्युक्त्वा विद्युद्वार्ता प्रातः अष्टमघण्टावादनसमये कण्ठीरवाचार्यः प्रैषयत् १५. मध्याह्ने द्वितीयघण्टावादनसमये अगच्छन्तं तारावार्तावहं दृष्ट्वा कण्ठीरवाचार्योऽपृच्छत् १६. विद्युद्वार्तावह! मह्यं विद्युन्मणिआर्डर वर्तते किम्? १७. कियतीभिः रूपिकाभिस्तव मणिआर्डर आगन्तव्यम्? १८. पञ्चाशता रूपिकाभिः १९. साक्षिणम् आह्वय! तस्यापि हस्तलेखं गृहीत्वा रूप्याणि तव ददामि २०. अहो! आश्चर्यमेतत्! नाद्यापि षष्ठी घण्टा अति-क्रान्ता, इयत्या त्वरया द्रव्यं मद्धस्तगतमभून्! ॥

---

# अथ विद्यावर्गः ॥ २२ ॥

## पाठः ५२.

१. अकारादिक्षकारान्तानि अक्षराणि; तान्येव एकपञ्चाशत् वर्णाः २. स्वहृद्गतस्य परबोधनाय पदानि वाक्यानि च उच्चार्यन्ते

---

15. तारावार्तावहः = telegraph-peon. 19. हस्तलेखः = signature.



३. दूरस्थबोधनाय अक्षरैः पत्रे लेख्यं लिख्यते ४. पठैतत् लेख्यम् ५. उच्चरयैतं शब्दम् ६. पाठ्यमुच्चैर्वाचय ७. अतित्वरया पठितं चेदन्यस्तन्न बुध्येत ८. मूढ! मोच्चैः पुनर्वद; तच्छ्रुत्वा अन्यस्त्वां परिहासिष्यति ९. एतत्पुस्तकं लिख १०. तवाक्षराणि चारूणि न सन्ति ११. अयं किं मकारः; उत पकारः इति संदिग्धं वर्तते १२. मषी वनाऽस्ति; मषिकरण्डं जलेन पूरय १३. इदानीं माषिः नितरां लघुर्जाता; तस्मात् क्रियन्ते पत्राणि १४. छुरिकया लेखनीं संस्कुरु १५. हिंदी, माहाराष्ट्री, गौर्जरी, तैलङ्गी, कार्नाटकी, द्राविडी, कैरली, यावनी, आङ्गली, तौलवी, गैर्वाणी, इत्यादयोऽनेका भाषा वर्तन्ते १६. सर्वासामपि प्रातिस्विकी लिपिः वर्तते १७. गैर्वाणी लिपिः देवनागरी १८. सा इतराभ्योऽप्यतिशयेन सुवाचा १९. रेखा विधातुं परिवर्तनदण्डम् आनय २०. तव लेखने अक्षरस्खालित्यं बहु वर्तते २१. संस्कृतभाषा दुर्बोधेति केचन मन्यन्ते; उद्यमिनां सर्वं सुलभमेव २२. कुतस्त्वं स्वभाषां संत्यज्य आङ्गलभाषया वदसि?

---

3. लेख्यम् = writing. 4. लेख्यम् = letter. 6. वाचय = read. 12. मषीकरण्डम् = ink-stand. 13. पत्रम् = paper. 14. लेखनी = pen. संस्कुरु = mend. 16. लिपिः = character. 18. सुवाचा = easily readable. 19. रेखा = line. परिवर्तन-दण्डः = ruler, ருல்கழி. 20. अक्षरस्खालित्यम् = spelling mistake. 21. दुर्बोधः = difficult. सुलभम् = easy.

## पाठः ५३.

१. आसन्दे उपविश्य लेखनफलके पत्राणि निक्षिप्य लिपिकरो लिखति २. अस्मिन्ग्रामे महती पाठशाला वर्तते ३. तस्यां शिरोमणिपरीक्षार्थम् अशीतिः छात्राः पठन्ति ४. तर्के व्याकरणे मीमांसायां द्वैताद्वैतविशिष्टाद्वैतवेदान्तेषु च परीक्षार्थं छात्राः पठन्ति ५. अतीतमासे शिरोमणिपरीक्षा प्राचलत् ६. अशीत्यां विद्यार्थिषु पञ्चपञ्चाशदेव विद्यार्थिनः परीक्षायै समुद्धृताः ७. तेषु च षट्त्रिंशदेव उत्तीर्णाः; शिष्टा भग्नाः ८. अस्यां पाठशालायां प्रतिपत् अष्टमी त्रयोदशी चतुर्दशी पूर्णिमावास्ये च अनध्ययनदिनानि ९. शीसवर्तिकया लिखितानि अक्षराणि शीघ्रमेव लुप्यन्ते १०. मष्या लिखितान्यक्षराणि सुरक्षितानि चेत् चिराय स्थिराणि स्युः ११. आङ्गलभाषायां लिखितं लेखं संस्कृतभाषायां परिवर्तयितुं जानासि किम्? १२. उपयुक्ताः श्लोका वाक्यानि च कण्ठस्थानि कर्तव्यानि १३. प्राप्ता विद्या असकृत् आवृत्त्या

---

1. आसन्दः= a chair. लेखनफलकम्= a desk, மேஜை मेज. लिपिकरः= a clerk, குமாஸ்தா, कारकून. 3. छात्रः= candidate. 4. तर्कः= logic. व्याकरणम्= grammar. मीमांसा= mimamsa. 6. समुद्धृतः= selected. 7. उत्तीर्णः= passed. भग्नः= failed. 8. अनध्ययनदिनम्= a day on which it is improper to study. 9. शीसवर्तिका= a pencil. 11. परिवर्तनम्= translation. 12. श्लोकः= a verse. 13. आवृत्तिः= repeating.



स्थिरा भवन्ति १४. अस्मिन्पुस्तके रम्याः कथाः सन्ति १५. सर्वविधेषु धनेषु विद्याधनम् उत्तमम् १६. तत्र दस्युभिरपह्रियते; कुपितेन राज्ञाऽपि अपहर्तुं न शक्यते १७. विद्या विनयं ददाति; विनयेन योग्यतां याति; योग्यतया धनमाप्नोति; धनेन धर्मं, ततः सुखं च विन्दते १८. स्वदेशे पूज्यते राजा; स्वगृहे पूज्यते धनी; विद्वांसः स्वग्रामे, परदेशे च पूज्यन्ते १९. तस्मात्सर्वप्रयत्नेन विद्याऽध्येतव्या २०. सा च बाल्ये अभ्यस्ता सुदृढा भवति ॥

---

# अथ हितोपदेशः ॥ २३ ॥

## पाठः ५४.

१. लोकमनुसृत्य वर्तस्व २. महतामुपदेशोऽनुसर्तव्यः ३. सर्वान् प्राणिन आत्मानमिव मन्यस्व ४. अनवद्यान्येव कर्माणि त्वया सेवितव्यानि ५. सत्यं वद; धर्मं चर ६. ऋषीणां यानि सुचरितानि तानि त्वयोपास्यानि ७. मातृदेवो भव; पितृदेवो भव; आचार्यदेवो भव; अतिथिदेवो भव ८. यदि ते कार्येषु विचिकित्सा स्यात्तर्हि यथा संमर्शिनो वर्तेरन् तथा वर्तेथाः

---

20. अभ्यासः=exercise, பயிற்சி.

4. अनवद्यम् = good. 6. सुचरितम् = good conduct.
7. मातृदेवः = one who thinks his mother as God.
8. विचिकित्सा = doubt. संमर्शिन् = one judging by reason.

९. महत्सु विद्यमानान्गुणानेव स्वीकुरु १०. **सर्वभूतानां अद्वेष्टा**
भव; **मैत्रो** भव; **करुणो** भव; **शुचिः** भवः ११. ईश्वरस्य
दासोऽहमिति मन्यस्व १२. त्यागी भव; संविभज्य भुङ्क्ष्व १३.
अहरहः वेदविहितानि कार्याणि कुरु १४. **पित्रोः** हितं कुरु;
इन्द्रियनिग्रहं कुरु १५. भगवान्सर्वेषां सुहृदिति विद्धि १६.
परेषामपराधान् **तितिक्षस्व** १७. राज्ञि **ईश्वरभावनां** कुरु
१८. ईश्वरेण यावद्दत्तं तावतैव संतुष्टो भव १९. क्षेमं प्राप्तुं
यतस्व; तथापि फलदाता ईश्वर एवेति चिन्तय २०. **सर्वप्रका-**
**रेण** ईश्वरं शरणं व्रज ॥

———o———

## पाठः ५५.

१. ईश्वरस्य **स्वरूपं** वेदेन जानीयात् २. **मन्वादिषु** स्मृति-
षूक्ता ये **वर्णाश्रमधर्मा**स्ते त्वयाऽनुष्ठेयाः ३. ईश्वरस्य ध्यानार्थं
**प्रतिमा** ऋषिभिः अभिहिताः ४. विष्णुर्गरुडारूढो वर्तते; शङ्ख-
चक्रादीनि आयुधानि धारयति; भक्तान् रक्षति; इति ध्यानं कुरु
५. शिवः वृषभारूढोऽस्ति; त्रिशूलं धराति; **भक्तेभ्यः** सर्वैश्वर्यं

---

10. अद्वेष्टा = not inimical. मैत्रः = friendly. करुणः = pitiful. शुचिः = clean. 12. त्यागी = a donor. 13. वेदविहितम् = declared in the Vedas. 14. पितरौ = parents. इन्द्रियनिग्रहः = restraining the organs of sense. 16. तितिक्षस्व = endure. 20. सर्वप्रकारेण = by all means.

1. स्वरूपम् = natural state. 2. वर्णाश्रमधर्माः = the duties of *Varnas* and *Asramas*. 3. प्रतिमा = an image.



ददाति; इति ध्यानं कुरु ६. धर्मिष्ठाः कदाऽपि न नश्यन्ति;
पापिष्ठाः कदाऽपि न क्षेमं लभन्ते इति **प्रतीहि** ७. **अक्षैर्मा** स्म
दीव्यः ८. **धर्मान्न प्रमदितव्यम्** ९. **कुशलान्न** प्रमदितव्यम् १०.
**भूत्याः** न प्रमदितव्यम् ११. **देवपितृकार्याभ्यां** न प्रमदितव्यम्
१२. **वेदप्रतिषिद्धानि** कर्माणि न सेवितव्यानि १३. न सुरां
पिबेत्; न **परदारान्** गच्छेत् १४. **बुद्धिभ्रंशकरं** आहारं मा
भक्षय १५. "अहं धनी, विद्वान्, सुरूपः" इति गर्विष्ठो मा भूः
१६. परस्त्रियं **मृत्युं** विद्धि १७. अतिलोभं, अतिव्ययं च मा कुरु
१८. परेषामैश्वर्यं दृष्ट्वा मा असूयेथाः १९. किंतु परेषां विद्यां दृष्ट्वा
असूयां कुरु; तां प्राप्तुं यत्नं च कुरु २०. सर्वथा आत्मानं गोपायेत् ॥

———x———

# अथ राज्यसामान्यवर्गः ॥ २४ ॥

## पाठः ५६.

१. **महाराज्ञी विक्टोरिया पूर्वमस्माकं चक्रवर्तिनी** आसीत्
२. इदानीं **तस्याः** पौत्रः **पञ्चमो जार्जः** अस्माकं **चक्रवर्ती** अस्ति

---

6. प्रतीहि = trust. 7. अक्षाः = dies. 8. धर्मः = virtue, duty. न प्रमदितव्यम् = should not be careless. 9. कुशलम् = skill. 10. भूतिः = prosperity. 11. देवकार्यम् = worship of God. पितृकार्यम् = obsequial rites, ceremony of parents. 12. वेदप्रतिषिद्धम् = prohibited in Vedas. 13. परदाराः = another's wife, the word दार is always plural and masculine gender. 14. बुद्धिभ्रंशकरम् = causing loss of understanding. 16. मृत्युः = death.

राज्यसामान्यम् = general administration.

1. चक्रवर्तिनी = Empress.

३. स लन्दन्नगरे महिष्या मेरीदेव्या, ज्येष्ठपुत्रेण युवराजेन यडुर्डेन, अन्यैः पुत्रैर्बन्धुभिश्च सह सुखमास्ते ४. वयं तस्य शासने **अकुतोभया** वर्तामहे ५. तत्रैका **प्रधानसभा** वर्तते ६. तस्यां सभायां अनेके **मन्त्रिणः कार्यदर्शिनश्च** नियुक्ता वर्तन्ते ७. महाराजः तैः सह संमन्त्र्य यावत्सु सूर्यः कदापि नास्तमेति तावतो देशान् शास्ति ८. सः अनेकसहस्रयोजनदूरे विद्यमानोऽपि बुद्धिसामर्थ्येन **भरतखण्डस्थं** सर्वमपि वृत्तान्तं स्वगृहे चलितमिव **करतलामलकवत्** सुस्पष्टं जानाति ९. तेन **स्वप्रतिनिधित्वेन** अधिकारितो **महामाण्डलिको** भरतखण्डे पूर्वं पाण्डवानां राजधानीभूते दिल्लीनगरे वर्तते ; तस्य **राजप्रतिनिधिः** इति नाम १०. भरतखण्डः मद्रपुरी, मुंबापुरी, कलिकातापुरी इति त्रिभिर्मुख्यैः **मण्डलैः** विभक्तः ११. त्रयाणामपि मण्डलानां प्रत्येकं **माण्डलिका** वर्तन्ते १२. एकैकमपि मण्डलम् अनेकैः **प्रान्तैः** विभक्तं वर्तते १३. एकैकस्यापि प्रान्तस्य प्रत्येकं **भरणाधिकारिणो** नियुक्ताः १४. एकैकोऽपि **प्रान्तः** **तालूकानामकैरनेकैर्भागैर्विभक्तोऽस्ति** १५.

4. अकुतोभयः=fearless from all sources. 5. प्रधानसभा = Parliament. 6. मन्त्रिन् = Minister. कार्यदर्शी = Secretary. 8. भरतखण्डः=India. करतलामलकवत् = like a myrobalam on the palm. 9. महामाण्डलिकः = Governor General. राजप्रतिनिधिः = Viceroy. 10. मण्डलम् = Presidency. 11. माण्डलिकः = Governor. 12. प्रान्तः= District. 13. भरणाधिकारी = Collector. 14. तालूका = Taluq.



तालूकाया अधिकारी **तहशील्दार्** नामा १६. तस्य शासने पञ्चषाः **करशोधनाधिकारिणः**, तथा प्रतिग्रामं **ग्रामगणकाः**, **ग्रामन्यायाधिपाश्च** विद्यन्ते १७. एतेषां साहाय्येन **तहशील्दारः** सम्पूर्णायास्तालूकायाः **करं** संगृह्णाति १८. एवं संचिते द्रव्ये तत्रत्यव्ययाय यावत् अपेक्षितं भवेत्तावत् **तालूकाकोशागारे** निक्षिप्यावशिष्टं सर्वं **प्रान्तकोशागारं** प्रेषयति १९. तत्रत्यः **प्रान्तकोशाध्यक्षः** तालूकाभ्य आगतं द्रव्यं तत्र निक्षिप्य रक्षति २०. अनेकेभ्यः **जिल्लाकोशगृहेभ्यः** तत्रत्यं सर्वं द्रव्यं **मण्डलकोशगृहं** प्रति प्रहीयते ॥

# अथ न्यायप्रविभागवर्गः ॥ २५ ॥

## पाठः ५७.

१. एकैकस्मिन्नपि मण्डले एकैका **महोत्तमन्यायसभा** अस्ति २. तस्यां सप्त अष्टौ वा **महोत्तमप्राड्विवाका** वर्तन्ते ३. प्रति-

16. करशोधनाधिकारी= Revenue Inspector. ग्रामगणकः =Village Karnam. ग्रामन्यायाधिपः= Village Munsiff. 17. करः = Revenue. 18. तालूकाकोशागारः = Taluq Treasury. प्रान्तकोशागारः = District Treasury. 19. कोशाध्यक्षः = Treasurer. 20. मण्डलकोशः = Presidency Treasury. प्रविभागः = Department.

1. महोत्तमन्यायसभा=High Court. 2. महोत्तमप्राड्विवाकः = High Court Judge.

प्रान्तं एकैकः प्रान्तप्राड्विवाकः, द्वित्राः उपप्राड्विवाकाश्च नियमिताः ४. प्रायः प्रतितालूकं मुनसीफनामा न्यायाधिपतिः अधिकारितोऽस्ति ५. पूर्वोक्ता एते सर्वेऽपि न्यायाधिकारिणः वादिना प्रतिवादिनं प्रति दत्तं अभियोगं दृष्ट्वा तस्य निरीक्षणदिनं निश्चित्य वादिप्रतिवादिनोर्निवेदयन्ति ६. वादिना स्वप्रतिनिधित्वेन कल्पितो न्यायवादी तस्मिन्व्यवहारे विद्यमानं न्यायं सयुक्तिकं सप्रमाणं च प्राड्विवाकाय निरूपयति ७. तथैव प्रतिवादिना कल्पितोऽन्यो न्यायवादी स्वन्यायं कथयति ८. ततोऽक्षदर्शकः हेतुवादिनोः उपन्यासं श्रुत्वा पक्षद्वयेऽपि साक्षिणो विचार्य सभ्यानाम् अभिप्रायं च पृष्ट्वा धर्मशास्त्रानुसारेण यावद्बुद्धि तत्त्वं निर्धारयति ९. निर्धारणपत्रिकां स्वयं विलिख्य अन्यायस्थेन न्यायस्थाय धनं दापयति ॥

—*—

3. प्रान्तप्राड्विवाकः = District Judge. उपप्राड्विवाकः = Subordinate Judge. 4. न्यायाधिपतिः = Judge. अधिकारितः = appointed. 5. वादी = plaintiff. प्रतिवादी = defendant. व्यवहारः = अभियोगः = suit. निरीक्षणदिनम् = hearing date. 6. न्यायवादी–हेतुवादी = pleader. न्यायः = argument. निरूपयति = pleads. 8. अक्षदर्शकः = Judge. उपन्यासः = argument. पक्षः = side. साक्षी = witness. सभ्यः = jury. यावद्बुद्धि = as far as one's knowledge goes. तत्वम् = truth. ९. निर्धारणपत्रिका = judgment.



# अथ दण्डधारप्रविभागवर्गः ॥ २६ ॥

## पाठः ६८.

१. सर्वेष्वपि पत्तनेषु महाग्रामेषु च दण्डधारस्थानानि कल्पितानि सन्ति २. तत्र अनेके रक्षापुरुषाः, कतिपये प्रधानरक्षापुरुषाः, एको दण्डधारनिरूपकश्च भवेयुः ३. रक्षापुरुषा नगरं ग्रामांश्च अटित्वा अकार्यकारिणो दमयन्ति ४. चोरेभ्यः प्रजानां रक्षणमेव तेषां मुख्यं कार्यम् ५. यदा कश्चिच्चोरः परगृहे भित्तौ सुरङ्गां कृत्वा वा कवाटस्य मुद्रां भङ्क्त्वा वा उल्लङ्घ्य वा गृहस्यान्तः प्रविश्य स्वामिनो धनं धान्यादिकं वा चोरयति तदा तं चोरं गृहीत्वा निरूपकस्य समीपं ते प्रापयन्ति ६. निरूपकः तं पाटच्चरं विचार्य स्वामिप्रायेण सह उपधर्माध्यक्षाय समर्पयति ७. स तं चोरं, गृहस्वामिनं, रक्षापुरुषांश्च विचार्य यथायोग्यं तं चोरं देहतो वा, धनतो वा, उभयतो वा, दण्डयति, कशया ताडयति कारागृहे वा निरोधयति ८. यदि कश्चिदयोग्यो निरपराधिनं ताडयति, अवमनुते वा, स्त्रियं दूषयति वा तमपि विचार्य अधिकारी दण्डयति ९. रक्षापुरुषा मद्यपान् अक्षदेविनश्च निगृह्णन्ति १०. सर्वेष्वप्यपराधेषु राजद्रोहो महान् ॥

दण्डधारः = Police. प्रविभागः = department.

1. दण्डधारस्थानम् = Police station. 2. रक्षापुरुषः = constable. प्रधानरक्षापुरुषः = Head constable. दण्डधारनिरूपकः = Police Inspector. 6. उपधर्माध्यक्षः = Sub-Magistrate. पाटच्चरः = a thief. 7. कशा = a whip, சௌக்கு. कारागृहम् = jail. 9. मद्यपः = a drunkard. अक्षदेवी = a gambler.

# अथ नगरपालनप्रविभागवर्गः ॥ २७ ॥

:-(*)-:

## पाठः ५९.

१. प्रतिनगरं **नगरपालिका सभा** जनानां **निरामयाय** स्थापिताऽस्ति २. तस्यां सभायामेकः **सभाध्यक्षः** एकः कार्यदर्शी बहवः **सभासदश्च** वर्तन्ते ३. कार्यदर्शी **आरोग्यनिरूपकान्** नगरं परितः संचार्य तेभ्यस्तत्र तत्र विद्यमानां न्यूनतां विज्ञाय तां परिहृत्य नगरं शुद्धं स्थापयति ४. नगरम् अशुद्धं चेत् **मारिका, विषूची, ग्रन्थिज्वरः** एवमादयो रोगा जनानां संभवेयुः ५. **नगरपालनव्ययार्थं** प्रजाभ्यः वार्षिको **गृहकरः वृत्तिकरश्च** संगृह्यते ॥

—(*)—

नगरपालनसभा = Municipality.

1. सभा = council. निरामयः = health. 2. सभाध्यक्षः = a chairman. सभासत् = councillor. 3. आरोग्यनिरूपकः = sanitary inspector. 4. मारिका = small-pox. 5. गृहकरः = house tax. वृत्तिकरः = profession tax.



# अथ पञ्चिकानिवेशनप्रविभागः ॥ २८ ॥

## पाठः ६०.

१. इदं **व्यवहारलेख्यानां** पञ्चिकानिवेशनस्थानम् २. अस्मिन् स्थाने **ऋणलेख्यानि विक्रयलेख्यानि दानपत्राणि** एवमादीनि **पत्राणि** तत्रत्यपञ्चिकारूढानि क्रियन्ते ३. एवं पत्राणां **राजकीयपञ्चिकायाम्** आरोपणेन “ मया ऋणं न गृहीतम् ” इति मिथ्या वक्तुं वा, “ अहं ऋणं दत्तवान् ” इति मिथ्या वक्तुं वा अवकाशो न भवति ४. पत्राणां योग्यतानुसारेण **निवेशकेन शुल्कं** गृह्यते ॥

# अथ लेखप्रापणप्रविभागः ॥ २९ ॥

## पाठः ६१.

१. पश्चात्र **पत्रिकाप्रापणस्थानम्** अस्ति २. अस्य **पोष्टाफीस्** इति नाम ३. इतरेभ्यः **कार्यस्थानेभ्य** इदं कार्यस्थानमत्यावश्यकम् ४. एतस्मिन्काले सर्वेषां बान्धवा **अधिकारार्थं** दूरदेशेषु वसन्ति ५. स्ववृत्तान्तं तेभ्यो ज्ञापयितुं, तेषां वृत्तान्तं स्वयं ज्ञातुं चेदं **स्थानं** बहूपयुज्यते

पञ्चिकानिवेशनम् = registration department.

1. व्यवहारलेख्यम् = a document. 2. ऋणलेख्यम् = Credit-deed. विक्रयलेख्यम् = Sale-deed. दानपत्रम् = Gift-deed. 3. पञ्चिका = Register book. आरूढम् = Recorded. 4. निवेशकः = Registrar. शुल्कम् = fee.

1. पत्रिकाप्रापणस्थानम् = Post office. 4. अधिकारः = duty.

६. **पोष्टवेतनस्य** प्रतिनिधितया **पोष्टमुद्राः** कृताः सन्ति ७. तेषां मूल्यं पैकात्रयादारभ्य क्लृप्तं वर्तते ८. **आच्छादितपत्राणां** अर्धानकमुद्रा संयोज्या ९. **पोष्टचीटिकाया** मूल्यं पैकात्रयम् १०. उत्तरलेखनाय **उत्तरचीटिकाऽस्ति**; तस्या मूल्यमर्धानकम् ११. पञ्चतोलातोलितायाः पुस्तकपोटलिकायास्तु **षट् पैकामुद्रा** संयोज्या १२. अन्यपदार्थानां **पोटलिकानां** आविंशतेस्तोलाया द्व्यानकमुद्रा १३. प्रेष्यमाणानां पत्रादीनां **पञ्चिकारोपणाय** द्वावानकौ पृथक् स्याताम् १४. मुद्रां संयोज्य कुंभकोणे **पत्रपेटिकायां** अद्य **निक्षिप्तानि** पत्रादीनि षष्ट्यधिकसप्तशतैकसहस्र (१७६०) क्रोशे विद्यमानं दिल्लीनगरं **षट्सप्तैः** दिनैर्गच्छेयुः १५. एतत्स्थानाध्यक्षस्य **पोष्टमास्तर्** इति नाम १६. अन्यस्थलेषु स्थितेभ्यो जनेभ्यो **द्रव्यादेश**द्वारा द्रव्यं प्रेषयितुं शक्यम् १७. तस्य आदशभ्यो रूपिकाभ्यः **शुल्कं** द्वौ आनकौ; आपञ्चविंशतेश्चतस्र आनकाः; तदुपरि प्रतिपञ्चविंशति चत्वार आनकाः १८. पश्य! **पत्रप्रापकाः** पत्रस्थानात् पत्रादीनि गृहीत्वा बहिर्गच्छन्ति १९. ते स्वस्ववीथिषु तानि पत्राणि तत्तत्स्वामिभ्यः प्रयच्छन्ति; **पञ्चिकारोपितानि** तु तेभ्यो **हस्तलेखं** गृहीत्वा प्रयच्छन्ति

6. पोष्टवेतनम् = Postage. मुद्रा = lable. 8. आच्छादितपत्रम् = Envelope 9. चीटिका = card. 10. उत्तरचीटिका = reply card. 11. पुस्तकपोटलिका = Book post. 12. पोटलिका = a parcel. 14. पत्रपेटिका = letter box. 16. द्रव्यादेशः = द्रव्यं दातुं आदेशः = Money order. 17. शुल्कम् = commission. 18. पत्रप्रापकः = post-man. 19. हस्तलेखः = signature.



२०. **पोष्टस्थानात् पोष्टगोण्यः** बाष्पशकटद्वारा देशान्तरं प्रेष्यन्ते; यत्र देशे बाष्पशकटश्रेणी नास्ति तत्र **जाङ्घिकानां शिरसि** अश्वशकटेषु, मोटार्शकटेषु वा गोणीर्निक्षिप्य प्रेषयन्ति पत्रस्थानाधिपाः ॥

## अथ संकीर्णप्रविभागवर्गः ॥३०॥

पाठः ६२.

१. एवं **लावणिकप्रविभागः आरण्यकप्रविभागः, अध्यापनप्रविभागः, वैद्यकप्रविभागः** इत्यादयोऽनेके **प्रविभागा** वर्तन्ते २. तत्तत्प्रविभागानां कार्यस्थानेषु **सेवकाः, लिपिकराः, प्रतिलेखकाः, गणनाध्यक्षाः, कोशाध्यक्षाः, निर्वाहकाः** इत्येवमादयोऽनेके अधिकारिणो वर्तन्ते ३. सर्वेभ्योऽधिकारिभ्यस्तत्तद्योग्यतानुसारेण मासिकं वेतनं दीयते ४. चिराय राज्याधिकारे सेवित्वा वार्धके स्वाधिकाराद्विरतेभ्यो **भूतपूर्वसेवाभृतिः** दीयते ५. उत्तमाधिकारे स्थिताः केचन **अपराधं** कृत्वा **अधमाधिकारं** प्राप्नुवन्ति ६. महापराधं कृतवन्तः केचन **भ्रष्टाधिकाराश्च** भवन्ति ७. केचनापराधिनः कंचित्कालम् **अधिकारात् निष्कास्यन्ते** ८. कतिचन समर्थाः **स्वकौशल्येन** उत्तमाधिकारिणः संतोष्य शीघ्रमुन्नतां **पदवीं** प्राप्नुवन्ति ॥

20. पोष्टगोणी = post bag. जाङ्घिकः = runner, messenger. सङ्कीर्ण = miscellaneous.

1. लावणिकः = salt department, आरण्यकः = forest. अध्यापनम् = education. वैद्यकम् = medical. 2. सेवकः = a peon. प्रतिलेखकः = a copyist. गणनाध्यक्षः = an accountant. निर्वाहकः = manager. 4. सेवित्वा = having served. भूतपूर्वसेवाभृतिः = pension. 6. भ्रष्टाधिकारः = dismissed from service. 7. कञ्चित्कालम् अधिकारात् निष्कास्यन्ते = are suspended. 8. कौशल्यम् = talent. पदवी = degree, rank.

# अथ आङ्ग्लराज्यस्तुतिः ॥ ३१ ॥

### पाठः ६३.

१. अस्माकं **चक्रवर्ती पञ्चमो जार्जः** एवं विधान्यनेकानि सौकर्याण्यस्माकं कृत्वा **भरतखण्डं** परिपालयति २. तेन रक्षिता वयमकुतोभया वर्तामहे ३. स स्वयं खैस्तमतस्थोपि भारतीयैरस्माभिः क्रियमाणस्य धर्मस्य साहाय्यं करोति ४. बाष्पशकटाः, तारायन्त्राणि, पोष्टव्यवस्था, पाठशालाः, मुख्यपत्तनेषु **जलप्रणालिकाः** एवमादीन्यनेकानि सौकर्याणि जनानां आङ्ग्लानां शासनकालादारभ्यैवोत्पन्नानि; नदीनां **संक्रमाः** ग्रामाद्ग्रामं गन्तुं मार्गाश्च विपुलीकृताः ५. अनृतभूयिष्ठेऽस्मिन्काले यद्येते आङ्ग्ला अस्माकं रक्षका नाभविष्यंस्तदा वयं पूर्वमेव व्यनङ्क्ष्याम ६. आस्माकीन एष भरतखण्ड एतेषामेव शासने **आचन्द्रार्कं** तिष्ठतु; अस्मन्महाराजः सपुत्रकलत्रः दीर्घायुर्भवत्विति च ईश्वरं प्रार्थयामहे ॥

# अथ कविवाक्यानि ॥ ३२ ॥

### पाठः ६४.

१. अनन्तरकरणीयमार्य आज्ञापयतु २. आर्ये! सम्यगनुबोधितोऽस्मि ३. अस्मिन्क्षणे विस्मृतं खलु मया ४. सूत!

1. चक्रवर्ती=An Emperor, a Sovereign. भरतखण्डः=India. 4. जलप्रणालिका=water pipe. संक्रमः= bridge. 6. आचन्द्रार्कम्=as long as the sun and the moon exist.



सुदूरममुना सारङ्गेण वयमाकृष्टाः ५. आश्रममृगोऽयं न हन्तव्यो न हन्तव्यः ६. समिदाहरणाय प्रस्थिता वयम् ७. भवतु तामेव द्रक्ष्यामि ८. किं न पश्यति भवान्? ९. कथमयं स भगवान्कण्वः?; १०. राजन्! अत्रैव मुहूर्तं तिष्ठ ११. तथापि तत्वत एनामुपलप्स्ये १२. एष नूनं तवात्मनो मनोरथः ॥

### पाठः ६५.

१. न एष दुष्टो विरमति २. अन्यतो वयं गमिष्यामः ३. नूनं यूयमप्यनेन कर्मणा परिश्रान्ताः ४. किमपि हृदये कृत्वा ब्रवीषि ५. इदानीमेव लब्धावकाशो मे मनोरथः ६. हला! एकाकिनीं मामत्र विहाय न ते गमनं युक्तम् ७. अरण्ये खलु मया रुदितम् ८. सावशेषं मे वचः ९. गच्छतां पुरो भवन्तौ १०. अहमप्यनुपदमागत एव ११. सखि! प्रष्टव्याऽसि त्वं किमपि १२. किं प्रष्टुकामाऽसि? १३. कथय किंनिमित्तं ते संतापः? १४. सखि! शृणु; कस्य वान्यस्य कथयिष्यामि १५. अवचितानि पूजापर्याप्तानि पुष्पाणि १६. अपि ज्ञायते कतमेन दिग्विभागेन गतः स जाल्मः? १७. ऐशान्या दिशा १८. सखीजनः खलु कुत्र भवेत्? ॥

### पाठः ६६.

१. अयि स्वस्ति भवत्यै? २. किं वा तूष्णीमास्ते भवान्? ३. **समासतो** ब्रवीमि श्रूयताम् ४. भो! अवहितोऽस्मि ५. अलं भवतः परिदेवितेन. ६. तदुपायश्चिन्त्यताम्, यथा

सफलप्रार्थनो भवेयम् ७. किमयं भुजङ्गनिर्मोकः ? ८. उपनय मे पुस्तकम् ९. हा ! कथं न दृश्यते १०. ननु विचिनुहि सम्यक् ११. अलमावेगेन ; समाश्वासिहि १२. एतदेव तत्पुस्तकम् १३. तेन राम इति वक्तव्ये रावण इति निर्गता वाणी १४. किमपि हृदये कृत्वा अन्यत्किमपि जल्पसि १५. भण विश्रब्धो यदसि वक्तुकामः १६. पत्तने सति ग्रामे रत्नपरीक्षा युज्यते किम् ? १७. किं नामैतत् ; यदंबुनि मज्जन्त्यलाबूनि, ग्रावाणः प्लवन्ते ? १८. अये ! कथमनभ्रा वृष्टिः ? १९. विचित्राणि विधिविलसितानि ॥

---

## पाठः ६७.

१. नास्ति खलु दुष्करं दैवस्य ? २. सर्वस्य वल्लभो जामाता भवति ३. गुणः खल्वनुरागस्य कारणम् ; न बलात्कारः ४. अपेयेषु तटाकेषु बहुतरमुदकं भवति ५. मूले च्छिन्ने कुतः पुष्पम् ? ६. शिरसि भयम् ; अतिदूरे तत्प्रतीकारः ७. न निष्परिग्रहं स्थानभ्रंशः पीडयिष्यति ८. यत्ने सकृद्विफलेऽपि नोद्यमस्त्याज्यः ९. प्रकृतिर्दुस्त्यजा १०. वक्तुं सुकरम् ; दुष्करं कर्तुम् ११. अनुकूलं हि दैवं सर्वस्मै स्वस्ति करोति १२. न हि सर्वः सर्वं जानाति १३. न सर्वदा सर्वस्य सदृशो दशापाकः १४. जलं जलेन संपृक्तं महाजलाय भवति १५. बद्धो वाससि ग्रन्थिः १६. एष त्वं स्वप्नलब्धैर्मोदकैर्ग्रामममुपनिमन्त्रयसि १७. किं गते सलिले सेतुबन्धेन ? १८. किं कृते विवाहे नक्षत्रपरीक्षया ? १९. अहो ! गरीयान् कालः ; यत् अश्रुतचरमपि श्रावयति ; अदृष्टचरमपि दर्शयति ॥



## पाठः ६८.

१. किं प्राहुणिकहस्तेन सर्पं मारयसि ? २. अनर्थशङ्कीनि बन्धुजनहृदयानि ३. यच्छीलः स्वामी, तच्छीलास्तस्य प्रकृतयः ४. किमात्मनो दोषं लोको विजानाति ? ५. किं त्वं स्वयं नष्टः परान्नाशयितुमिच्छसि ? ६. न हि जगति मशको मातङ्गस्य प्रतिस्पर्धी भवति ७. न खलु क्षुधितोऽपि शार्दूलः कदाचिदपि शाद्वलमत्ति ८. न खलु बधिराणां कुतूहलमातनोति कोकिलालापः ९. न हि बलिभुजः प्रक्षाल्यमाना वलक्षतां लभन्ते १०. नहि शतमप्यन्धाः संभूय पश्यन्ति ११. नहि संबन्धिजने परिहासवचनानि पापकारणानि १२. स्वदेशगतः शशः परदेशकुञ्जरातिशायी ॥

---

## पाठः ६९.

१. अलमतिविस्तरेण २. वैदेशिकोऽस्मीति पृच्छामि कः पुनरसौ जामाता ? ३. विभाण्डकसुतस्तामृश्यशृङ्ग उपयेमे ४. सर्वथा ऋषयो देवाश्च श्रेयो विधास्यन्ति ५. भो भोः ! क्वेदानीं महाराजः ? ६. एवं जनाः कथयन्ति ७. देव ! ऋश्यशृङ्गाश्रमादष्टावक्रः प्राप्तः ८. आर्यपुत्र ! तर्हि किं विलम्ब्यते ? ९. दौवारिक ! त्वरितं प्रवेशय तम् १०. भगवन् ! अभिवादयावहे ११. स्वस्ति वाम् १२. इत आस्यताम् १३. अपि कुशलमार्यायाः शान्तायाः ? १४. सा अस्मानपि स्मरति ? १५. तत्किमन्यदाशास्महे ; केवलं वीरप्रसवा भूयाः १६. अनुगृहीताः स्मः १७. इदं च शान्तया संदिष्टम् १८. वत्से ! त्वं

कठोरगर्भाऽसीति नानीताऽसि यज्ञम् १९. तत् पुत्रपूर्णोत्सङ्गाम् आयुष्मतीं द्रक्ष्यामः २०. तथाऽस्तु ॥

---

पाठः ७०.

१. कः कोऽत्र भोः? २. विश्राम्यतां तावदष्टावक्रः ३. वन्दस्व देवि! ऋषीन् ४. नम एतेभ्यः ५. एष मिथिलावृत्तान्तः ६. एते वयमिदानीम् अयोध्यां प्राप्ताः ७. स्मरति वा तं प्रदेशं भवान्? ८. अयि! कथं विस्मरामि? ९. हा धिक्! हा धिक्! १०. यथातथा वा भवतु ११. आर्यपुत्र! युष्माभिरप्यागन्तव्यम् १२. अयि मुग्धे! एतदपि वक्तव्यम्? १३. तेन हि प्रियं मे १४. प्रिये! वातायनोपकण्ठे संविष्टौ भवाव १५. एवं भवतु १६. एहि संविशावः ॥

---

पाठः ७१.

१. ज्ञायतां भोः! किमेतत्? २. कां पुनरत्रभवतीमवगच्छामि ३. कुतः पुनरिहागम्यते? ४. अहो! नु मोऽश्चित्रमेतत् ५. विश्रान्ताऽस्मि भद्रे! ६. संप्रत्यगस्त्याश्रमस्य पन्थानं मे ब्रूहि ७. इतः पञ्चवटीमनुप्रविश्य गम्यतामनेन गोदावरीतीरेण ८. यथाऽऽज्ञापयति भवांस्तथा करोमि ९. आः! किमुक्तं भवति? १०. यद्भवति तद्भवतु ११. संप्रत्येव वासिष्ठेन कौसल्यायाः सकाशं अरुन्धती प्रेषिता १२. दिष्ट्या सुप्रभातमद्य, यदहं त्वां पश्यामि ॥

सर्वस्तरतु दुर्गाणि सर्वो भद्राणि पश्यतु ।
सर्वः कामानवाप्नोतु सर्वः सर्वत्र नन्दतु ॥

---



॥ श्रीः ॥

# रघुवंशे ॥

## एकादशः सर्गः ॥

कौशिकेन स किल क्षितीश्वरो राममध्वरविघातशान्तये ।
काकपक्षधरमेत्य याचितस्तेजसां हि न वयः समीक्ष्यते ॥ १ ॥

कृच्छ्रलब्धमपि लब्धवर्णभाक्तं दिदेश मुनये सलक्ष्मणम् ।
अप्यसुप्रणयिनां रघोः कुले न व्यहन्यत कदाचिदर्थिता ॥२॥

यावदादिशति पार्थिवस्तयोर्निर्गमाय पुरमार्गसंस्क्रियाम् ।
तावदाशु विदधे मरुत्सखैः सा सपुष्पजलवर्षिभिर्घनैः ॥ ३ ॥

तौ निदेशकरणोद्यतौ पितुर्धन्विनौ चरणयोर्निपेततुः ।
भूपतेरपि तयोः प्रवत्स्यतोर्नम्रयोरुपरि बाष्पबिन्दवः ॥ ४ ॥

तौ पितुर्नयनजेन वारिणा किञ्चिदुक्षितशिखण्डकावुभौ ।
धन्विनौ तमृषिमन्वगच्छतां पौरदृष्टिकृतमार्गतोरणौ ॥ ५ ॥

लक्ष्मणानुचरमेव राघवं नेतुमैच्छदृषिरित्यसौ नृपः ।
आशिषं प्रयुयुजे न वाहिनीं सा हि रक्षणविधौ तयोः क्षमा ॥ ६ ॥

मातृवर्गचरणस्पृशौ मुनेस्तौ प्रपद्य पदवीं महौजसः ।
रेजतुर्गतिवशात्प्रवर्तिनौ भास्करस्य मधुमाधवाविव ॥ ७ ॥

तौ बलातिबलयोः प्रभावतो विद्ययोः पथि मुनिप्रदिष्टयोः ।
मम्लतुर्न मणिकुट्टिमोचितौ मातृपार्श्वपरिवर्तिनाविव ॥ ८ ॥

पूर्ववृत्तकथितैः पुराविदः सानुजः पितृसखस्य राघवः ।
उह्यमान इव वाहनोचितः पादचारमपि न व्यभावयत् ॥ ९ ॥

तौ सरांसि रसवद्भिरम्बुभिः कूजितैः श्रुतिसुखैः पतत्रिणः ।
वायवः सुरभिपुष्परेणुभिश्छायया च जलदाः सिषेविरे ॥ १० ॥

स्थाणुदग्धवपुषस्तपोवनं प्राप्य दाशरथिरात्तकार्मुकः ।
विग्रहेण मदनस्य चारुणा सोऽभवत्प्रतिनिधिर्न कर्मणा ॥ ११ ॥

तौ सुकेतुसुतया खिलीकृते कौशिकाद्विदितशापया पथि ।
निन्यतुः स्थलनिवेशिताटनी लीलयैव धनुषी अधिज्यताम् ॥

ज्यानिनादमथ गृह्णती तयोः प्रादुरास बहुलक्षपाच्छविः ।
ताटका चलकपालकुण्डला कालिकेव निबिडा बलाकिनी ॥१३॥

तीव्रवेगधुतमार्गवृक्षया प्रेतचीवरवसा स्वनोग्रया ।
अभ्यभावि भरताग्रजस्तया वात्ययेव पितृकाननोत्थया ॥१४॥



उद्यतैकभुजयष्टिमायतीं श्रोणिलम्बिपुरुषान्त्रमेखलाम् ।
तां विलोक्य वनितावधे घृणां पत्रिणा सह मुमोच राघवः ॥

यच्चकार विवरं शिलाघने ताटकोरसि स रामसायकः ।
अप्रविष्टविषयस्य रक्षसां द्वारतामगमदन्तकस्य तत् ॥ १६ ॥

बाणभिन्नहृदया निपेतुषी सा स्वकाननभुवं न केवलाम् ।
विष्टपत्रयपराजयस्थिरां रावणश्रियमपि व्यकम्पयत् ॥ २७ ॥

नैर्ऋतघ्नमथ मन्त्रवन्मुनेः प्रापदस्त्रमवदानतोषितात् ।
ज्योतिरिन्धननिपाति भास्करात्सूर्यकान्त इव ताटकान्तकः ॥

वामनाश्रमपदं ततः परं पावनं श्रुतमृषेरुपेयिवान् ।
उन्मनाः प्रथमजन्मचेष्टितान्यस्मरन्नपि बभूव राघवः ॥ १९ ॥

आससाद मुनिरात्मनस्ततः शिष्यवर्गपरिकल्पितार्हणम् ।
बद्धपल्लवपुटाञ्जलिद्रुमं दर्शनोन्मुखमृगं तपोवनम् ॥ २० ॥

तत्र दीक्षितमृषिं ररक्षतुर्विघ्नतो दशरथात्मजौ शरैः ।
लोकमन्धतमसात्क्रमोदितौ रश्मिभिः शशिदिवाकराविव ॥

वीक्ष्य वेदिमथ रक्तबिन्दुभिर्बन्धुजीवपृथुभिः प्रदूषिताम् ।
सम्भ्रमोऽभवदपोढकर्मणामृत्विजां च्युतविकङ्कतस्रुचाम् ॥ २२ ॥

उन्मुखः सपदि लक्ष्मणाग्रजो बाणमाश्रयमुखात्समुद्धरन् ।
रक्षसां बलमपश्यदम्बरे गृध्रपक्षपवनेरितध्वजम् ॥ २३ ॥

तत्र यावधिपती मखद्विषां तौ शरव्यमकरोत्स नेतरान् ।
किं महोरगविसर्पिविक्रमो राजिलेषु गरुडः प्रवर्तते ॥ २४ ॥

सोऽस्त्रमुग्रजवमस्त्रकोविदः सन्दधे धनुषि वायुदैवतम् ।
तेन शैलगुरुमप्यपातयत्पाण्डुपत्रमिव ताटकासुतम् ॥ २५ ॥

यः सुबाहुरिति राक्षसोऽपरस्तत्र तत्र विससर्प मायया ।
तं क्षुरप्रशकलीकृतं कृती पत्त्रिणां व्यभजदाश्रमाद्बहिः ॥२६॥

इत्यपास्तमखविघ्नयोस्तयोः सांयुगीनमभिनन्द्य विक्रमम् ।
ऋत्विजः कुलपतेर्यथाक्रमं वाग्यतस्य निरवर्तयन्क्रियाः ॥२७॥

तौ प्रणामचलकाकपक्षकौ भ्रातराववभृथाप्लुतो मुनिः ।
आशिषामनुपदं समस्पृशद्दर्भपाटिततलेन पाणिना ॥ २८ ॥

तं न्यमन्त्रयत सम्भृतक्रतुर्मैथिलः स मिथिलां व्रजन्वशी ।
राघवावपि निनाय बिभ्रतौ तद्धनुःश्रवणजं कुतुहलम् ॥ २९ ॥

तैः शिवेषु वसतिर्गताध्वभिः सायमाश्रमतरुष्वगृह्यत ।
येषु दीर्घतपसः परिग्रहो वासवक्षणकलत्रतां ययौ ॥ ३० ॥

प्रत्यपद्यत चिराय यत्पुनश्चारु गौतमवधूः शिलामयी ।
स्वं वपुः स किल किल्बिषच्छिदां रामपादरजसामनुग्रहः ॥३१॥



राघवान्वितमुपस्थितं मुनिं तं निशम्य जनको जनेश्वरः ।
अर्थकामसहितं सपर्यया देहबद्धमिव धर्ममभ्यगात् ॥ ३२ ॥

तौ विदेहनगरीनिवासिनां गां गताविव दिवः पुनर्वसू ।
मन्यते स्म पिबतां विलोचनैः पक्ष्मपातमपि वञ्चनां मनः ॥३३॥

यूपवत्यवसिते क्रियाविधौ कालवित्कुशिकवंशवर्धनः ।
राममिष्वसनदर्शनोत्सुकं मैथिलाय कथयाम्बभूव सः ॥ ३४ ॥

तस्य वीक्ष्य ललितं वपुः शिशोः पार्थिवः प्रथितवंशजन्मनः ।
स्वं विचिन्त्य च धनुर्दुरानमं पीडितो दुहितृशुल्कसंस्थया ॥३५॥

अब्रवीच्च भगवन्मतङ्गजैर्यद्बृहद्भिरपि कर्म दुष्करम् ।
तत्र नाहमनुमन्तुमुत्सहे मोघवृत्ति कलभस्य चेष्टितम् ॥ ३६ ॥

ह्रेपिता हि बहवो नरेश्वरास्तेन तात धनुषा धनुर्भृतः ।
ज्यानिघातकठिनत्वचो भुजान्स्वान्विधूय धिगिति प्रतस्थिरे ॥

प्रत्युवाच तमृषिर्निशम्यतां सारतोऽयमथवा गिरा कृतम् ।
चाप एव भवतो भविष्यति व्यक्तशक्तिरशनिर्गिराविव ॥३८॥

एवमाप्तवचनात्स पौरुषं काकपक्षकधरेऽपि राघवे ।
श्रद्दधे त्रिदशगोपमात्रके दाहशक्तिमिव कृष्णवर्त्मनि ॥ ३९ ॥

व्यादिदेश गणशोऽथ पार्श्वगान्कार्मुकाभिहरणाय मैथिलः ।
तैजसस्य धनुषः प्रवृत्तये तोयदानिव सहस्रलोचनः ॥ ४० ॥

तत्प्रसुप्तभुजगेन्द्रभीषणं वीक्ष्य दाशरथिराददे धनुः ।
विद्रुतक्रतुमृगानुसारिणं येन बाणमसृजद्वृषध्वजः ॥ ४१ ॥

आततज्यमकरोत्स संसदा विस्मयस्तिमितनेत्रमीक्षितः ।
शैलसारमपि नातियत्नतः पुष्पचापमिव पेशलं स्मरः ॥ ४२ ॥

भज्यमानमतिमात्रकर्षणात्तेन वज्रपरुषस्वनं धनुः ।
भार्गवाय दृढमन्यवे पुनः क्षत्रमुद्यतमिव न्यवेदयत् ॥ ४३ ॥

दृष्टसारमथ रुद्रकार्मुके वीर्यशुल्कमभिनन्द्य मैथिलः ।
राघवाय तनयामयोनिजां रूपिणीं श्रियमिव न्यवेदयत् ॥४४॥

मैथिलः सपदि सत्यसङ्गरो राघवाय तनयामयोनिजाम् ।
सन्निधौ द्युतिमतस्तपोनिधेरग्निसाक्षिक इवातिसृष्टवान् ॥ ४५ ॥

प्राहिणोच्च महितं महाद्युतिः कोसलाधिपतये पुरोधसम् ।
भृत्यभावि दुहितुः परिग्रहाद्दिश्यतां कुलमिदं निमेरिति ॥४६॥

अन्वियेष सदृशीं स च स्नुषां प्राप चैनमनुकूलवाग्द्विजः ।
सद्य एव सुकृतां हि पच्यते कल्पवृक्षफलधर्मि काङ्क्षितम् ॥ ४७ ॥

तस्य कल्पितपुरस्क्रियाविधेः शुश्रुवान्वचनमग्रजन्मनः ।
उच्चचाल बलभित्सखो वशी सैन्यरेणुमुषितार्कदीधितिः ॥४८॥

तौ समेत्य समये स्थितावुभौ भूपती वरुणवासवोपमौ ।
कन्यकातनयकौतुकक्रियां स्वप्रभावसदृशीं वितेनतुः ॥ ४९ ॥



पार्थिवीमुदवहद्रघूद्वहो लक्ष्मणस्तदनुजामथोर्मिलाम् ।
यौ तयोरवरजौ वरौजसौ तौ कुशध्वजसुते सुमध्यमे ॥ ५० ॥

ते चतुर्थसहितास्त्रयो बभुः सूनवो नववधूपरिग्रहाः ।
सामदानविधिभेदनिग्रहाः सिद्धिमन्त इव तस्य भूपतेः ॥ ६१ ॥

ता नराधिपसुता नृपात्मजैस्ते च ताभिरगमन्कृतार्थताम् ।
सोऽभवद्वरवधूसमागमः प्रत्ययप्रकृतियोगसन्निभः ॥ ५२ ॥

एवमात्तरतिरात्मसम्भवांस्तान्निवेश्य चतुरोऽपि तत्र सः ।
अध्वसु त्रिषु विसृष्टमैथिलः स्वां पुरीं दशरथो न्यवर्तत ॥५३॥

तेजसः सपदि राशिरुत्थितः प्रादुरास किल वाहिनीमुखे ।
यः प्रमृज्य नयनानि सैनिकैर्लक्षणीयपुरुषाकृतिश्चिरात् ॥५४॥

पित्र्यमंशमुपवीतलक्षणं मातृकं च धनुरूर्जितं दधत् ।
यः ससोम इव घर्मदीधितिः सद्विजिह्व इव चन्दनद्रुमः ॥५५॥

तं पितुर्वधभवेन मन्युना राजवंशनिधनाय दीक्षितम् ।
बालसूनुरवलोक्य भार्गवं स्वां दशां च विषसाद पार्थिवः ॥५६॥

नाम राम इति तुल्यमात्मजे वर्तमानमहिते च दारुणे ।
हृद्यमस्य भयदायि चाभवद्रत्नजातमिव हारसर्पयोः ॥ ५७ ॥

तेन कार्मुकनिषक्तमुष्टिना राघवो विगतभीः पुरोगतः ।
अङ्गुलीविवरचारिणं शरं कुर्वता निजगदे युयुत्सुना ॥ ५८ ॥

क्षत्रजातमपकारवैरि मे तन्निहत्य बहुशः शमं गतः ।
सुप्तसर्प इव दण्डघट्टनाद्रोषितोऽस्मि तव विक्रमश्रवात् ॥ ५९ ॥

मैथिलस्य धनुरन्यपार्थिवैस्त्वं किलानमितपूर्वमक्षणोः ।
तन्निशम्य भवता समर्थये वीर्यशृङ्गमिव भग्नमात्मनः ॥ ६० ॥

अन्यदा जगति राम इत्ययं शब्द उच्चरित एव मामगात् ।
व्रीडमावहति मे स सम्प्रति व्यस्तवृत्तिरुदयोन्मुखे त्वयि ॥६१॥

क्षत्रियान्तकरणोऽपि विक्रमस्तेन मामवति नाजिते त्वयि ।
पावकस्य महिमा स गण्यते कक्षवज्ज्वलति सागरेऽपि यः ॥६२॥

विद्धि चात्तबलमोजसा हरेरैश्वरं धनुरभाजि यत्त्वया ।
खातमूलमनिलो नदीरयैः पातयत्यपि मृदुस्तटद्रुमम् ॥ ६३ ॥

तन्मदीयमिदमायुधं ज्यया सङ्गमय्य सशरं विकृष्यताम् ।
तिष्ठतु प्रधनमेवमप्यहं तुल्यबाहुतरसा जितस्त्वया ॥ ६४ ॥

कातरोऽसि यदि वोद्गतार्चिषा तर्जितः परशुधारया मम ।
ज्यानिघातकठिनाङ्गुलिर्वृथा बध्यतामभययाचनाञ्जलिः ॥६५॥

एवमुक्तवति भीमदर्शने भार्गवे स्मितविकम्पिताधरः ।
तद्धनुर्ग्रहणमेव राघवः प्रत्यपद्यत समर्थमुत्तरम् ॥ ६६ ॥

पूर्वजन्मधनुषा समागतः सोऽतिमात्रलघुदर्शनोऽभवत् ।
केवलोऽपि सुभगो नवाम्बुदः किं पुनस्त्रिदशचापलाञ्छितः ॥



तेन भूमिनिहितैककोटि तत्कार्मुकं च बलिनाधिरोपितम् ।
निष्प्रभश्च रिपुरास भूभृतां धूमशेष इव धूमकेतनः ॥ ६७ ॥

तावुभावपि परस्परस्थितौ वर्धमानपरिहीनतेजसौ ।
पश्यति स्म जनता दिनात्यये पार्वणौ शशिदिवाकराविव ॥६८॥

तं कृपामृदुरवेक्ष्य भार्गवं राघवः स्खलितवीर्यमात्मनि ।
स्वं च संहितमघोघमाशुगं व्याजहार हरसूनुसन्निभः ॥ ६९ ॥

न प्रहर्तुमलमस्मि निर्दयं विप्र इत्यभिभवत्यपि त्वयि ।
शंस किं गतिमनेन पत्रिणा हन्मि लोकमुत ते मखार्जितम् ॥ ७० ॥

प्रत्युवाच तमृषिर्न तत्त्वतस्त्वां न वेद्मि पुरुषं पुरातनम् ।
गां गतस्य तव धाम वैष्णवं कोपितो ह्यसि मया दिदृक्षुणा ॥७१॥

भस्मसात्कृतवतः पितृद्विषः पात्रसाच्च वसुधां ससागराम् ।
आहितो जयविपर्ययोऽपि मे श्लाघ्य एव परमेष्ठिना त्वया ॥७२॥

तद्गतिं मतिमतां वरेप्सितां पुण्यतीर्थगमनाय रक्ष मे ।
पीडयिष्यति न मां खिलीकृता स्वर्गपद्धतिरभोगलोलुपम् ॥७३॥

प्रत्यपद्यत तथेति राघवः प्राङ्मुखश्च बिससर्ज सायकम् ।
भार्गवस्य सुकृतोऽपि सोऽभवत्स्वर्गमार्गपरिघो दुरत्ययः ॥७४॥

राघवोऽपि चरणौ तपोनिधेः क्षम्यतामिति वदन्समस्पृशत् ।
निर्जितेषु तरसा तरस्विनां शत्रुषु प्रणतिरेव कीर्तये ॥ ७५ ॥

राजसत्वमवधूय मातृकं पित्र्यमस्मि गमितः शमं यदा ।
नन्वनिन्दितफलो मम त्वया निग्रहोऽप्ययमनुग्रहीकृतः ॥७६॥

साधयाम्यहमविघ्नमस्तु ते देवकार्यमुपपादयिष्यतः ।
ऊचिवानिति वचः सलक्ष्मणं लक्ष्मणाग्रजमृषिस्तिरोदधे ॥७७॥

तस्मिन्गते विजयिनं परिरभ्य रामं
स्नेहादमन्यत पिता पुनरेव जातम् ।
तस्याभवत्क्षणशुचः परितोषलाभः
कक्षाग्निलङ्घिततरोरिव दृष्टिपातः ॥ ७८ ॥

अथ पथि गमयित्वा क्लृप्तरम्योपकार्ये
कतिचिदवनिपालः शर्वरीः शर्वकल्पः ।
पुरमविशदयोध्यां मैथिलीदर्शनीनां
कुवलयितगवाक्षां लोचनैरङ्गनानाम् ॥ ७९ ॥

इति रघुवंशे सीताविवाहवर्णनो नामैकादशस्सर्गः ।

द्वितीयपाठः समाप्तः ॥


# Ready For Sale.

| No. | Title | | Rs As. Ps. |
|---|---|---|---|
| 1. | The Sanskrit I Reader | ... | 0—4—6 |
| 2. | The Sanskrit II Reader | ... | 0—10—0 |
| 3. | The Sanskrit III Reader | ... | 0—8—0 |
| 4. | Sabdaroopavali ... | ... | 0—3—6 |
| 5. | Brihat Sabdaroopavali... | ... | 0—8—0 |
| 6. | Sanskrit Copy-book No. I | ... | 0—2—0 |
| 7. | Sanskrit Copy-book No. II | ... | 0—2—0 |

The above 7 books are approved by the Director of Public Instruction, Madras.

| No. | Title | | Rs As. Ps. |
|---|---|---|---|
| 8. | Tamil meaning of Sanskrit II Reader | | 0—6—0 |
| 9. | 5th Canto of Kumarasambhava | ... | 0—1—6 |
| 10. | 11th Canto of Raghuvamsa | ... | 0—1—6 |
| 11. | Brihad Dhaturupavali Cloth Bound | | 4—4—0 |
| 12 | The Sanskrit Fourth Reader | | 0—13—0 |
| 13 | Naishada with Mallinatha's commentary 1—6 Sargas | | 1—8—0 |
| 14. | Do. do. 7—12 Sargas | | 1—12—0 |

Postage and Packing expenses extra.

For copies, Apply to:—

T. K. Venkobacharya,
Manager,
MADHVA VILASA BOOK DEPOT,
63, East Aiyen Street,
KUMBAKONAM.

& R. Subrahmanya Vadhyar,
Book-Seller,
KALPATHI, PALGHAT.

March 1927.